ओ३म्

इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार,03 मार्च 2013

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 03 मार्च, 2013 से 09 मार्च, 2013

फा.कृ.06 ● वि० सं०–2069 ● वर्ष 77, अंक 47, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 189 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,113 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

अमृतसर में हुआ विराट वैदिक आर्य सम्मेलन

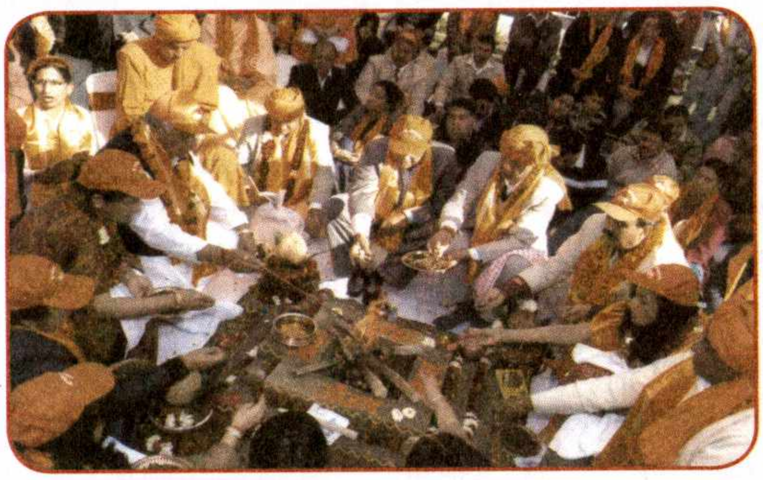

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब के तत्वाधान में 'नारी अस्मिता' को समर्पित विराट् वैदिक आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन माननीय पूनम सूरी जी प्रधान–डीएवी प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अध्यक्षता में बी.बी.के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर के प्रांगण में किया गया।

सम्मेलन का शुभारंभ एकादश कुंडीय हवन यज्ञ से हुआ जिसमें आदरणीय पूनम सूरी जी, अमृतसर की समस्त डी.ए.वी संस्थाओं और आर्य समाजों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

मुख्यातिथि आदरणीय श्री पूनम सूरी जी ने उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा–''आज हम सांस्कृतिक संकट से गुजर रहे हैं। टी.वी. कल्चर, उपभोक्तावाद, भूमंडलीकरण के बढ़ते कुप्रभावों, खुले बाजार की अर्थव्यवस्था ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मायाजाल को जिस रूप में हमारे सामने पसारा है, उससे मुक्त होकर हम अपने जीवन में नवोन्मेष सकते हैं। इसके लिये हमें स्वस्थ मानसिकता–परिष्कृत चेतना से युक्त होना आवश्यक है ताकि प्राचीन नैतिक आदर्शों –मूल्यों को प्राथमिकता देते हुए जीवन में आगे बढ़ें।''

स्वामी सूर्यदेव जी ने प्रबुद्ध स्त्रियों एवं चिन्तकों को समाज में व्याप्त इन विसंगतियों और स्थितियों से जूझने का आह्वान किया। महात्मा चैतन्य मुनि ने अपने वक्तव्य में कहा कि ''धर्म, समाज, राजनीति प्रत्येक स्तर पर प्रदूषण फैल रहा है इसलिए हम प्रथमतः स्वयं को श्रेष्ठ बनायें''। स्वामी सुमेधानन्द जी ने प्रेरणा देते हुए कहा'' समाज मे परिवर्तन लाने का सर्वप्रथम एवं गुरूतर दायित्व परिवार का है। हमें सुधार प्रक्रिया में पहले स्वयं को सुधारना होगा तभी आदर्श समाज की सृष्टि संभव है।

इस सम्मेलन का सर्वाधिक महत् प्रयोजन राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सुविख्यात–प्रतिष्ठित और पुरस्कृत महिलाओं को विशिष्ट प्रतिभा सम्मान से अलंकृत करना था। इस अलंकरण से क्रमशः प्रख्यात समाज सेविका प्रो लक्ष्मीकान्ता चावला, दक्ष प्रशासिका डॉ आशिमा जैन, महान शिक्षाविद् श्रीमती नीलम भगत, पारंगत कला साधिका डॉ नीटा मोहिन्द्रा,अर्जुन पुरस्कार विजययेत्री सुमन शर्मा एवं क्रीड़ाजगत में उदीयमान महिला खिलाड़ियों–कु. सीमा, कु. रेखा, कु. सोनिया एवं बालिका महक गुप्ता आदि को विभूषित किया गया।

बी.बी.के डी.ए.वी. कॉलेज के नृत्य संगीत विभाग द्वारा निर्मित 'नारी दशा–दिशा' नामक नृत्य तथा जल संरक्षण' पर आधारित संयुक्त नृत्य प्रस्तुति (डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल लारेंस रोड एवं डी.ए.वी इन्टरनैशनल स्कूल वेरका, बाई पास) ने जन–जन को जागृत किया।

कार्यक्रम के अन्त में जरुरतमन्द महिलाओं को कम्बल, सिलाई मशीनें, रेडक्रास डी.ए.वी स्कूल के विद्यार्थियों को हियरिंगएड और विकलांगो को ट्राई साईकिलें वितरित की गईं। इस अवसर नगर की समस्त डी.ए. वी. संस्थाओं–आर्य समाजों सहित 2000 से अधिक व्यक्तियों ने सहभागिता ली। श्री सुदर्शन कपूर जी ने समस्त अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

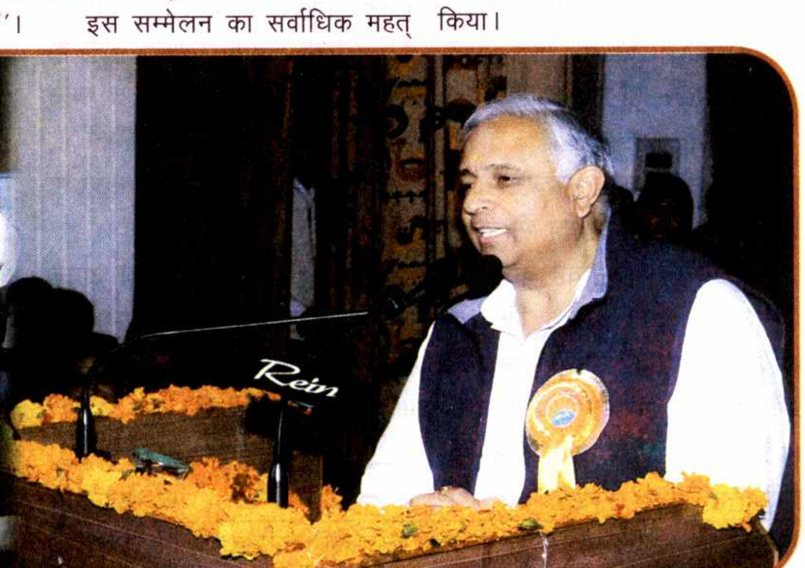

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 03 मार्च, 2013 से 09 मार्च 2013

जंगम-स्थावर का राजा

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा, शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनाम्, अरान्न नेमिः परि ता बभूव।।

ऋग् 1.32.15

ऋषिः **हिरण्यस्तूपः आङ्गिरसः।** देवता **इन्द्रः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(वज्रबाहु)** वज्रभुज **(इन्द्रः)** परमेश्वर **(यातः)** चलने-फिरने वाले का, **(अवसितस्य)** निश्चल का **(शमस्य)** शांत का, **(शृङ्गिण च)** और तीक्ष्ण वृत्ति वाले का **(राजा)** राजा [है]। (सः इत्) वही **(चर्षणीनां)** मनुष्यों का **(राजा)** राजा [होकर] **(क्षयति)** निवास कर रहा है। **(अरान्)** अरों को **(नेमिः न)** परधि के समान [वह] **(ता)** उन्हें **(परि बभूव)** चारों ओर से व्याप्त किये हुए है।

● मैं अपने इन्द्र प्रभु का क्या वर्णन करुँ, कैसे उसकी महिमा का गान करूँ? उसकी महिमा के गीत गाने को जो जी चाहता है, पर वाणी में शब्द नहीं मिलते। फिर भी टूटे-फूटे शब्दों में ही सही, कुछ तो गुनगुना लूँ, कुछ तो अपने मन की साध पूरी की लूँ। मेरा प्रभु चलने फिरनेवाले जंगम अर्थात् चेतन जगत् और निश्चल होकर बैठ स्थावर अर्थात् जड़-जगत् दोनों का राजा है, दोनों पर उसका अधिपत्य है। वह पशु, पक्षी,सरीसृप, मानव आकद तथा वन, पर्वत, नदी, सागर, सूर्य, चन्द्र आदि सबका अधिष्ठाता और व्यवस्थापक है। उसकी आज्ञा के बिना एक पत्ता तक नहीं हिल सकता। वह शान्त-जीवन व्यतीत करने वाले, तप-साधन में निरत रहने वाले शान्तवृत्ति ऋषि-मुनियों का भी राजा है और तीक्ष्णश्रृंग अर्थात् तीक्ष्ण साधनों का अवलम्बन करने वाले तीक्ष्णवृत्ति रजोगुणियों का भी राजा है, नियन्त्रधकर्ता है। वह वज्रबाहु है, भुजा में वज्र धारण किये है और उच्छृङ्खलों को उनके उच्छृङ्खल कर्मों के अनुसार यथायोग्य दण्ड दे रहा है। कोई उसकी दण्ड-व्यवस्था से कितना ही बचना चाहे, बच नही सकता। वही हम सब 'चर्षणियों' का कृषिकर्ता मानवों का भी राजा होकर निवास कर रहा है, चाहे हम अपनी मनोभूमि का कर्षण करके उसमें सद्गुणों का बीज वपन कर आन्तरिक सम्पदा को लहलहाते हों, चाहे हल चलाकर, उत्तम बीज बोकर भूमि को सस्यश्यामला बनाते हों।

जैसे रथ-चक्र की नेमि समस्त घरों को चारों ओर से व्यापत किये होती है और अपने में थामे होती है, वैसे ही जगत् का राजा वह इन्द्रदेव जगत् की वस्तुओं के चारों और व्याप्त होकर उन्हें सहारा दिये हुए है, तभी संसार के सब पदार्थ पृथक्-पृथक् इकाई होते हुए भी परस्पर सामंजस्य रखेहुए हैं और विश्व के चक्र को चला रहे हैं। अन्यथा उनकी स्थिति वैसी ही हो जाए, जैसी नेमि के टूट जाने पर रथ-चक्र के घरों की होती है, तब विश्वचक्र -प्रवर्तन ही समाप्त हो जाए।

आओ, हम एक स्वर से अपने उस राजराजेश्वर इन्द्र प्रभू के चरण-चंचरीक बनकर उसकी महिमा का गुंजार करें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

घोर घने जंगल में

● महात्मा आनन्द स्वामी

सत्संग के प्रभाव की बात कर रहे थे स्वामी जी। वर्षा की एक बूंद कैसे मोती, कपूर अथवा विष बन जाती है, यह बताकर एक वकील महोदय का प्रसंग सुनाया और कहा कि अपने कार्यो से समय निकाल कर सत्संग में जाना कितना लाभप्रद है। दूसरी वस्तु है तपस्वी जीवन। तप वही जो प्रजापति ने कहा था – 'इन्द्रियों का दमन करो'। दमन करना शुत्राता करना नहीं, वश में रखना है। इन्द्रियों को वश में न रखने से विनाश ही विनाश है। सद्गुणों और उत्तम आचरणों से हृदय, मन और आत्मा के मल को दूर किया जा सकता है। यह तप है।

गीता का उद्धरण देकर शारीरिक, वाचिक और मानसिक तप की बात कही। शारीरिक तप को देव और देवताओं की पूजा बताते हुए देव-यज्ञ और यज्ञ में डाले गये पदार्थो की शक्ति के करोड़ गुणा होकर मनुष्य के पास आने की बात कही। देव यज्ञ की महिमा बताते हुए अग्नि के साथ मिल कर पदार्थों शक्ति बढ़ने की बात नही कही कहते हुए जवाहर लाल नेहरू की बात कह रहे है की भाषण की बात कर रहे थे।

अब आगे.......

वैसे यदि जवाहरलाल जी भाषण दें तो उनकी आवाज् शायद लाख, दो लाख या दस लाख व्यक्ति सुनें। रेडियो की अग्नि के साथ मिल जाने के पश्चात् इसी आवाज् को करोड़ों लोग सुनते हैं। सहस्रों मील की दूरी पर भी सुनते हैं। जो भी पदार्थ अग्नि में पड़कर अग्निमय होगा, उसकी शक्ति लाखों-करोड़ों गुणा बढ़ जाएगी और जब यह आत्मा अग्निमय परमात्मा के साथ मिलेगा तो उसकी शक्ति भी करोड़ों गुणा बढ़ जाएगी। उसके अन्दर वह आनन्द जाग उठेगा, वह शक्ति जाग उठेगी जो यज्ञ के बिना, अग्निरूप परमात्मा के साथ आत्मा को मिलाये बिना कभी जाग नहीं सकती।

यह है देवपूजा! परन्तु यह तो जड़ देवताओं की पूजा है। इनके अतिरिक्त चेतना देवता भी हैं। माता देवता है, पिता देवता है, अशिक्षा देने वाला आचार्य देवता है, घर में बिना बुलाये या बुलाये जाने पर आने वाला अतिथि देवता है। इसलिए उपनिषदों ने कहा-

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।

माता के समान कोई महान् व्यक्तित्व इस असार संसार में नहीं है, ऐसा हमारे शास्त्र मानते हैं। माता को बहुत ऊँचा दर्जा दिया है उन्होंने। और कहा है-

नास्ति मात्रा समं तीर्थं, नास्ति मात्रा समा गतिः।
नास्ति मात्रा समं त्राणं, नास्ति मात्रा समा प्रपा।।

'माता के समान कोई तीर्थ नहीं। माता के समान गति नहीं, माँ के समान कोई रक्षक नहीं। माता की पूजा के समान कोई पुण्य नहीं।' जिसकी माँ जीवित है उसे किसी भी दूसरे तीर्थ पर जाने की आवश्यकता नहीं। उसका तीर्थ घर में विद्यमान है। हमारे शास्त्रों ने माँ को यह दर्जा दिया तो बिना सोचे-समझे नहीं। माँ ही इस संसार-सागर को तरने के लिए मनुष्य को शरीररूपी नौका प्रदान करती है। वह सुन्दर विचारों के चप्पू देकर कहती हैं, 'जा बेटा! अब इन चप्पुओं की सहायता से इस नौका को चला, जा तू भवसागर से पार हो जाएगा।

इसलिए माता को देवता कहा। इस प्रकार पिता का आचार्य और अतिथि को भी देवता कहा। इन सबकी पूजा करना, सत्कार करना, यह देवयज्ञ है।

देव के पश्चात् द्विज, परन्तु यह द्विज कौन है? बालक जब बड़ा होता है, तब वह समझने लगता है तो गुरु के पास जाता है। गुरु उसे शिक्षा देता है। यह बालक का दूसरा जन्म है। उस समय यज्ञोपवीत धारण करके वह द्विज बनता है। ऐसे लोगों की सेवा करना, उनका सत्कार करना, उनकी सहायता करना भी शारीरिक तप है।

तब गुरु की सेवा करना भी तप है। गुरु उसे कहते हैं जो परमात्मा को प्राप्त करने का सीधा मार्ग बताये, जो कल्याण का रास्ता दिखाये, धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। ऐसे ही गुरु को ढूँढ़ने और उसके पास जाने की आज्ञा उपनिषदों ने दी है-

तद् विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।

'तद्विज्ञानर्थम्' उसके अर्थात् आत्मा और परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए- आत्मा और परमात्मा का दर्शन करने वाले विज्ञान को पाने के लिए वह

अर्थात् ज्ञान का अभिलाषी गुरु के पास जाए। परन्तु किस प्रकार? क्या अकड़कर? अपनी धन–सम्पत्ति का अभिमान लेकर? अपने बड़प्पन का अभिमान लेकर? नहीं, 'समित्पाणिः' हाथ में समिधा लेकर, सिर झुकाकर, विनम्र बनकर उसके पास जाए। परन्तु किसके पास जाए? कैसे गुरु के पास पहुँचे? उपनिषद् कहता है 'श्रोत्रियम्'– उसके पास जो चारों वेदों को जानने वाला है, जो प्रत्येक प्रकार के ज्ञान और विज्ञान का स्वामी है और 'ब्रह्मनिष्ठम्' जिसने ब्रह्म को पा लिया है, आत्मदर्शन कर लिया है, परमात्मा को अनुभव से देख लिया है, ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए।

आजकल गुरु धारण करने की प्रथा बहुत तीव्र हो रही है। कई लोग मेरे पास भी आते हैं; कहते हैं– हम आपको गुरु धारण करना चाहते हैं। मैं हँसकर कहता हूँ, 'अरे बाबा! गुरु तो सबका परमात्मा है, मुझे तुम गुरु किस प्रकार बना लोगे?' परन्तु आजकल गुरु बनने वाले भी बहुत हैं। उनकी यही इच्छा होती है कि अधिक–से–अधिक लोग उनके चेले बन जाएँ। एजेण्ट बना रक्खे हैं उन्होंने, जो लोगों के पास जाकर कहते हैं, फ़लाँ व्यक्ति को गुरु बना लो। ये एजेण्ट अपने साथ रजिस्टर लिये घूमते हैं, चेलों के नाम उसमें दर्ज करते रहते हैं। यह गुरुडम ठीक नहीं, ऐसे गुरु भी ठीक नहीं। गुरु के लिए आवश्यक है कि उसमें तीन गुण हों। पहला यह कि आप उसके पास जाएँ, उसके पास बैठें, तो बैठने को जी चाहे। यह नहीं कि बैठने के कुछ ही देर बाद मन कहने लगे, चलो, जिस व्यक्ति के पास बैठकर बैठे रहने को जी न चाहे, समझो कि उसमें गुरु बनने का गुण नहीं। प्रत्येक व्यक्ति में एक आकर्षण–शक्ति रहती है। अंग्रेज़ी में उसे Personal Magnetism कहते हैं। योगाभ्यास से, आत्मदर्शन से, सुकर्म से और सदाचार से इस आकर्षण में इतनी वृद्धि हो जाती है कि समीप बैठा व्यक्ति उसकी ओर इस प्रकार खिंचने लगता है जैसे लोहा चुम्बक के पास पहुँचकर इसकी ओर खिंचता है। ऐसे ही इस व्यक्ति के पास बैठने वाले का मन खिंचने लगता है। आकर्षण की लहरें, किरणें, इस व्यक्ति के भीतर से निकलने लगती है। वे पास बैठनेवाले को मानो अपने साथ बाँध लेती हैं। यह पहला गुण है। यदि यह गुण आपके गुरु में नहीं तो समझिए आप गलत आदमी के पास पहुँच गये; उस व्यक्ति में आपका गुरु बनने की योग्यता नहीं।

दूसरी बात यह है कि उस व्यक्ति ने अपनी जिह्वा को वश में किया है या नहीं। यह जिह्वा बहुत शक्तिशाली इन्द्रिय है। स्वाद भी लेती है, बोलती भी है। एक–साथ यह ज्ञानेन्द्रिय भी है और कर्मेन्द्रिय भी। जिसने इसको वश में नहीं किया वह किसी भी दूसरी इन्द्रिय को वश में नहीं कर सकता। यदि किसी व्यक्ति की जीभ कड़वा बोलती है, हृदय को दुखाने वाली बात करती है तो समझो कि उसने अपनी जिह्वा पर अधिकार नहीं किया; और यदि वह व्यक्ति हर समय स्वाद ही देखता रहता है, हर समय खाने की मीनू (menu) ही बनाता रहता है, तो समझो कि वह व्यक्ति विद्वान् होने पर भी किसी–न–किसी दिन गिरेगा अवश्य। ऐसा व्यक्ति गुरु बनने के योग्य नहीं। जिसने अपनी इन्द्रियों को ही वश में नहीं किया, वह आपको क्या सिखाएगा?

और यदि ये दोनों बातें ठीक हों, यदि उसके पास बैठे रहने को जी चाहे और उसने अपनी जिह्वा को वश में कर लिया है तो कुछ दिन उसके निकट रहकर देखिए, उसे छेड़कर देखिए कि उसे क्रोध आता है या नहीं। यदि उसके क्रोध की ज्वाला भड़क उठती है तो समझिए कि उस व्यक्ति में गुरु बनने की योग्यता नहीं।

सन्त दादू की कथा मैंने बहुत बार सुनाई है, आप भी सुनिए। दादू चले गये एक नये इलाके में। नगर से दूर जंगल में ठहर गये। ज्यों–ज्यों लोगों को पता लगा, त्यों–त्यों वे जंगल में आकर ही प्रभु–भक्ति का अमृत पीने लगे। शहर के कोतवाल ने भी सन्त दादू के आने की बात सुनी। उनके मन में भी आया कि चलकर इस महात्मा के दर्शन करूँ जिसकी प्रशंसा कितने ही लोग करते हैं। अपने घोड़े पर चढ़कर कोतवाल महोदय जंगल की ओर चल दिये। काफ़ी दूर आ गये तो भी दादू महाराज का पता नहीं लगा। कुछ दूर जाने पर एक व्यक्ति दिखाई दिया– दुबला–पतला शरीर, केवल एक लंगोटी पहने। वह झाड़ियों को साफ़ कर रहा था। मार्ग की झाड़ियों को काटता और परे फेंक देता, ताकि मार्ग साफ़ हो जाए। कोतवाल ने उसके पास जाकर पूछा, "अरे ओ भिखारी! तुझे पता है कि सन्त दादू कहाँ रहते हैं?"

उस व्यक्ति ने कोतवाल की ओर देखा, परन्तु बोला नहीं। कोतवाल ने समझा यह बहरा है; चिल्लाकर बोले, "अरे मूर्ख, मैं पूछता हूँ कि दादू कहाँ रहता है?"

इस बार उस व्यक्ति ने कोतवाल की तरफ़ देखा भी नहीं; अपना काम करता रहा।

कोतवाल को क्रोध आया। जिस चाबुक से वह घोड़े को चलाता आया था उसी से उस व्यक्ति को मारने लगा। चाबुक से उस व्यक्ति के शरीर पर नीले–नीले निशान पड़ गये। इससे भी वह व्यक्ति नहीं बोला तो कोतवाल साहब ने चाबुक का डण्डा उसके सिर पर दे मारा और चिल्लाकर कहा, "मूर्ख की सन्तान! हाँ या ना भी नहीं कह सकता? परन्तु वह व्यक्ति फिर भी नहीं बोला। उसके सिर से रक्त बहने लगा। उसकी ओर भी उसने ध्यान नहीं दिया।

खून देखकर कोतवाल महोदय रुके, वे समझे, यह व्यक्ति गूँगा और बहरा ही नहीं, पागल भी है। घोड़े को लेकर वे आगे बढ़े। थोड़ी ही दूर बढ़े थे कि एक व्यक्ति परली ओर जाता हुआ मिला। कोतवाल ने उससे भी पूछा, "अबे ओ जानेवाले! तुझे पता है इस जंगल में सन्त दादू कहाँ रहते हैं?"

उस व्यक्ति ने कहा, "आपको इसी मार्ग पर पीछे दिखाई नहीं दिये? मैं तो अभी उन्हें देखकर आया हूँ।"

कोतवाल ने पूछा, "कहाँ हैं वे?"

उस व्यक्ति ने कहा, "इस रास्ते पर पीछे तो थे। लंगोटी पहने मार्ग की काँटेदार झाड़ियाँ काट रहे थे जिससे मार्ग चलने वालों को कष्ट न हो।"

कोतवाल ने आश्चर्य से मुँह फाड़कर कहा, "कौन? वह लंगोटी–वाला, दुबला–पतला–सा व्यक्ति?"

यात्री ने कहा, "वही तो! वही तो महात्मा दादू हैं! आपने शायद उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, उन्हें पीछे छोड़ आये।"

कोतवाल ने जल्दी से घोड़ा मोड़ा। वापस उस व्यक्ति के पास पहुँचे, जिसके शरीर पर अब भी चाबुक के चिन्ह थे और जिसने अपने सिर पर पट्टी बाँध ली थी। उसके पास जाकर बोले, "आप... आप क्या दादू हैं?"

उस व्यक्ति ने मुस्कराकर उनकी ओर देखा; धीमे से बोला, "इस शरीर को दादू भी कहते हैं।"

कोतवाल जल्दी से घोड़े से उतरा, उनके पैरों में गिर पड़ा। दुःखभरी आवाज में बोला, "क्षमा कर दो महाराज! मैं तो आपको गुरु धारण करने के लिए आया था।"

दादू ने उसे प्यार से उठाया। बोले, "तो फिर यह दुःख किसलिए? व्यक्ति साधारणतया घड़ा खरीदने के लिए जाता है तो उसे ठोक–पीटकर देखता है कि वह ठीक है या नहीं। तुम तो जीवन का मार्ग दिखाने वाला गुरु चाहते थे। तुमने यदि गुरु को ठोक–पीटकर देख लिया तो इसमें हर्ज क्या है? थोड़ी देर ठहरो। मैं यह झाड़ी परे फेंक लूँ, फिर बैठकर बातें करेंगे। ये झाड़ियाँ और इनके काँटे मार्ग चलनेवालों को बहुत कष्ट देते हैं।"

यह है गुरु का गुण! परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि जिसे आप गुरु बनाना चाहते हैं उसे पीटना शुरू कर दीजिए। ऐसा नहीं। उसके पास बैठकर देखिए कि उसे क्रोध आता है या नहीं। यदि क्रोध नहीं आता तो ठीक व्यक्ति है। उसे गुरु अवश्य बनाओ, परन्तु होश से बनाओ। देख–भालकर बनाओ। इसलिए उपनिषद् के ऋषि ने कहा–

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

'उठो, जागो और पहुँचो। उनके पास जो पहुँचे हुए हैं।' परन्तु यह विचित्र बात क्या हुई? प्रायः पहले जागते हैं, पीछे उठते हैं, तब जाते हैं वहाँ, जहाँ जाना होता है। यहाँ इससे विपरीत पहले कहा 'उठो', फिर कहा 'जागो', इसका अर्थ क्या हुआ? क्या उपनिषद के ऋषि ने अशुद्ध बात कह दी? नहीं। ऋषियों की प्रत्येक बात में कोई रहस्य होता है। उपनिषद् के ऋषि ने भी यदि कहा, 'उठो, 'जागो और पहुँचो उनके पास जो पहुँचे हुए हैं' तो इसलिए कि उठो चलो, दृढ़ निश्चय से आगे बढ़ो कि गुरु खोजना है। परन्तु देखो सावधान, जागते रहना, कहीं धोखा न खा जाना! असली घी की बजाय डालडा न खरीद लेना। इस संसार में धोखा बहुत है। जगह–जगह बोर्ड लगे हुए है, 'यहाँ योग सिखाया जाता है, यहाँ आत्मदर्शन कराया जाता है।' दुकानें बहुत बन गई हैं दुनिया में; इनसे सावधान रहना! यह देखना कि जिसको गुरु बनाना चाहते हो उसमें गुरु बनने का गुण भी है या नहीं। यदि पहले बताये गये तीन गुण उसमें हैं तो समझ लो, जिसकी तुम्हें तलाश थी वह मिल गया। यदि नहीं तो खोज जारी रक्खो, गुरु अभी मिला नहीं।

'देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम्' देवता, द्विज, गुण और प्राज्ञ, इनकी पूजा करना। देवता, द्विज और गुरु की बात बता दी; परन्तु प्राज्ञ कौन है? वह जिसकी प्रज्ञा, बुद्धि जाग उठी है। यह भी पाँच प्रकार की होती है– पहले बुद्धि, फिर सुबुद्धि, फिर मेधा, तब सुमेधा और इससे आगे प्रज्ञा। प्रज्ञा बुद्धि वह है जिसमें तपोगुण बहुत कम रह जाए। रजोगुण और तमोगुण रहें परन्तु इतने कम कि न होने के बराबर रह जाएं। ऐसे व्यक्ति को प्राज्ञ कहते हैं। ऐसे लोगों की पूजा की विधि क्या है? यह कि इनकी सेवा कीजिए। इन्हें भूख लगती हो तो अन्न दीजिए। बीमार हो तो औषध दीजिए। थक गये हों तो मुट्ठी–चाँपी कीजिये। नंगे हों तो कपड़ा दीजिये। इन्हें धन की आवश्यकता हो तो धन दीजिये। रक्षा की आवश्यकता हो तो रक्षा कीजिए। यह है इनकी पूजा का प्रकार।

परन्तु यह मैं शारीरिक तप की बात कह रहा हूँ। इस पूजा के बाद शारीरिक तप का एक और रूप है– 'शौचम' अन्दर और बाहर की पवित्रता। यह शरीर है न, इसको भीतर और बाहर दोनों और से शुद्ध रखना। कई लोग तो दो–दो सप्ताह तक नहाते ही नहीं और कश्मीर में तो कई लोग छः–छः माह तक नहाने का नाम नहीं लेते। कुछ लोग वहाँ भी प्रतिदिन नहाते हैं और कुछ लोग देहली में भी 'पंजस्नानी' ही करते हैं। रविवार आया, छुट्टी का दिन है तो बोले, 'चलो भाई, आज मुंह–हाथ धो लो।' इस मुँह–हाथ धोने को कहते हैं 'पंजस्नानी' – दो हाथ, दो पाँव, एक मुँह, हो गई 'पंजस्नानी'। ऐसे लोगों का कहना है–

'पंजस्नानी बड़ा ज्ञानी, नित्य नहावे दरिद्री'।

अब बताओ, नित्य नहाना ही गन्दगी बन गया!

ऋषि दयानन्द की वेदाधारित समग्र क्रान्ति

● डॉ. भवानी लाल भारतीय

जब कोई व्यक्ति सर्वस्व त्यागी होकर संन्यास की दीक्षा लेता है तो प्रतिज्ञारूप में उसे पुत्रैषणा, वित्तैषणा तथा लोकैषणा से स्वयं को सर्वथा मुक्त करना पड़ता है। ऐषणा त्याग का अभिप्राय यह है कि अब आगे संन्यास का व्रत ले लेने पर न तो उसे स्त्री, पुत्र, परिवार के प्रति कोई आसक्ति रहेगी और न वह धन के प्रति कोई आकर्षण अनुभव करेगा। साथ ही लोक के प्रति भी उसमें समत्व भाव जग जाएगा और वह निन्दा–स्तुति, हानि–लाभ, सुख–दुःख, यहां तक कि जीवन और मरण के प्रति भी आसक्ति रहित हो जाएगा। पुराकालीन महापुरुषों ने इसी प्रकार निरासक्त होकर तप, त्याग और वैराग्य का मार्ग ग्रहण कर चतुर्थाश्रम की दीक्षा ली थी। ऐसे परिव्राजकों की नामावलियां हमारे इतिहास में सुरक्षित हैं।

तथापि इन सर्वस्व त्यागी संन्यासियों ने स्वहित की अवहेलना भले ही की हो, लोकहित तथा जनकल्याण को सर्वोपरि महत्व दिया था। आचार्य शंकर ने तो अल्पकाल में ही गुरु गोविन्दपाद से संन्यास ले लिया था, किन्तु उनका अनतिदीर्घ जीवन शास्त्रों की व्याख्या तथा वैदिक धर्म की पुनः स्थापना में ही व्यतीत हुआ था। शंकराचार्य द्वारा जैन–बौद्धादि अवैदिक नास्तिक मतों का मूलोच्छेद करने तथा सत्य सनातन वैदिक धर्म को आर्यावर्त में पुनः प्रतिष्ठित करने के महान् कार्य की श्लाघा करते हुए युगपुरुष दयानन्द ने लिखा था– "बाइस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड़ देशोत्पन्न ब्राह्मण, ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़कर सोचने लगे कि अहह! सत्य आस्तिक वेद मत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है। इनको किसी प्रकार हटाना चाहिए।" इस प्रकार वैदिक धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने में शंकराचार्य के पुरुषार्थ की स्वामी दयानन्द ने सर्वत्र सराहना की है। दृष्टव्य–स.प्र. 11वां समुल्लास।

आचार्य विष्णुगुप्त– इसी भारत में चाणक्य जैसा महामति, प्रज्ञापुरुष उत्पन्न हुआ था जिसने यद्यपि विधिवत् संन्यास की दीक्षा तो नहीं ली थी किन्तु अपनी अद्वितीय बुद्धिमत्ता, सूझ–बूझ तथा नीतिमत्ता के कारण जिसने नन्दों के अत्याचारी साम्राज्य को समाप्त किया और चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध का अधीश्वर बनाया। इस साम्राज्यसृष्टा महापुरुष का उत्तरवर्ती जीवन सर्वथा निरासक्त, सांसारिक वैभव–विलास से दूर एक तपस्वी का–सा था जिसके पर्ण–लता अविष्ठित निवास का चित्र अंकित करते हुए नाटककार विशाखदत्त ने लिखा है–"यह है महामति चाणक्य की पर्णकुटीं इसके भीतर एक ओर यज्ञाग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिए समिधाएं रखी हैं तो दूसरे छोर पर समिधाओं को तोड़ने के लिए एक पत्थर पड़ा है। कुटिया का छप्पर इतना क्षीण है कि रात्रि के समय उससे चन्द्रिका की शीतल किरणें छन–छन कर आती हैं। बस भारत के विगत महामंत्री का यही सादगी भरा जीवन है।" (मुद्राराक्षस नाटक)

समर्थ रामदास– संन्यास की दीक्षा शिवाजी महाराज को हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा में प्रवृत्त करने वाले समर्थ रामदास ने भी ली थी। कहते हैं कि युवा रामदास का जब विवाह हो रहा था और उन्हें वैवाहिक प्रतिज्ञाएं बोलने के लिए कहा जा रहा था तो अचानक उन्हें आसन्न गृहस्थ के दायितव को ग्रहण करने में अरुचि हुई और वे विवाहमण्डप को त्यागकर युगपुरुष रामदास बन गये।

स्वामी दयानन्द की संन्यास दीक्षा– स्वामी दयानन्द के संन्यास ग्रहण में प्रमुख दो कारण दिखाई देते हैं। प्रथम, परमात्मा के सच्चे स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना और मृत्यु के रहस्य को जानना। आगे चलकर जब उन्होंने स्वदेश के विभिन्न भागों में भ्रमण कर उक्त शंकाओं का समाधान जानना चाहा तो उन्हें पता लगा कि समस्या उससे कहीं अधिक गम्भीर तथा भयंकर है जितनी कि वह दिखाई देती है। उन्हें धर्म के नाम पर सर्वत्र पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास तथा अन्धश्रद्धा दिखाई दी। उनकी जीवनी में एक प्रसंग आता है जब उन्होंने परिस्थितियों की भयावहता को देखा ओर उसे लाइलाज पाया। तब उनके हृदय में निराशा की काली घटाएं उमड़ पड़ीं और एक बार तो विचार आया कि जीवन में क्या रखा है, क्यों नहीं शरीर को हिमालय की इन बर्फानी उपत्यकाओं में विसर्जित कर दूं? किन्तु तत्क्षण निराशा दूर हो गई और दूसरा विचार मन में कौंध गया कि मर जाना तो कोई पुरुषार्थ नहीं है, अपितु ज्ञान प्राप्त कर परोपकार में स्वयं को लगाना ही सच्चा पुरुषार्थ है। दृष्टव्य–नव **जागरण के पुरोधा।**

लोकोपकार के इसी श्रेष्ठ विचार ने आगे चलकर स्वामी दयानन्द को स्वधर्म, स्वदेश तथा अखिल मानवता के हित के लिए स्वयं को सर्वात्मना समर्पित करने की प्रेरणा दी। उनके जीवन में हम देखते हैं कि जब–जब उन्हें लोकसंग्रह के मार्ग को छोड़कर केवल स्वकल्याण के दम पर चलने के लिए कहा गया, तब–तब उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि निज का हित कर लेना कोई बहुत बड़ा पुरुषार्थ नहीं है। मानव जीवन का लक्ष्य तो सर्वभूत–हित में लगकर निखिल मानवता की सेवा में स्वयं को लगाना है। उनके जीवन के कतिपय ऐसे प्रसंग दृष्टव्य हैं–उत्तराखण्ड भ्रमण काल में ऊखीमठ के महन्त ने जब उनके तप, तयाग, वैराग्य और विद्वता को देखा तो उन्हें परामर्श दिया कि वे इधर–उधर का देशाटन छोड़कर इस मठ में उनका शिष्यत्व स्वीकार कर लें और महन्त पद के अधिकारों और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का उपभोग करें। वीतराग दयानन्द का स्पष्ट उत्तर था कि यदि उन्हें धन–सम्पत्ति और वैभव की लालसा होती तो उनके पिता की सम्पत्ति कम नहीं थी। जब उस पैतृक वैभव का मोह न रखकर उन्होंने वेराग्य का मार्ग ग्रहण कर लिया तो अब इस पथ से उन्हें कोई विचलित नहीं कर सकता। लोकहित उनकी प्रथम और अन्तिम कामना है।

लगभग ऐसा ही उत्तर उन्होंने सोरों के गंगातट पर स्वामी कैलाश पर्वत नामक एक संन्यासी को दिया जिसने उन्हें परामर्श दिया था कि उच्च योग साधनायुक्त दयानन्द को लोकहित के पचड़े में न पड़कर समाधि सिद्धिपूर्वक ब्रह्मानन्द का आस्वादन कर अपने परलोक को बनाना चाहिए। स्वामी दयानन्द का स्पष्ट उत्तर था–"यदि मैं एकाकी समाधि सिद्ध कर परमार्थ के पथ पर चल पड़ूं तो यह मेरा शुद्ध स्वार्थ होगा। **मैं तो जन–जन को क्लेश–कष्ट, आपद–विपद से मुक्ति दिलाकर अधिक से अधिक लोगों की भलाई करना चाहता हूँ।** दयानन्द की इसी लोकानुरंजन वृत्ति ने सर्वास्व त्यागी होने पर भी उन्हें एक महान वैचारिक क्रान्ति का सूत्रधार बनाया और उनका यह क्रान्तिकारी चिन्तन अध्यात्म, धर्म, समाज, राष्ट्र तथा निखिल मानव हित का कार्यक्रम लेकर संसार के सामने आया।

यहां हम ऊपर संकेतित बिन्दुओं को शीर्षक बनाकर स्वामी दयानन्द की समग्र क्रान्ति की एक रुपरेखा प्रस्तुत कर रहे हैं। ध्यान रहे कि दयानन्द के चिन्तन की यह क्रान्तिकारी विचारधारा सर्वतोभावेन वेदों के उदात्त विचारों पर आधारित है।

स्वामी दयानन्द की आध्यात्मिक क्रान्ति–प्राणिशास्त्र की दृष्टि से तो मानव तथा पशु में कतिपय समानताएं हैं जिन्हें सूक्तिकार ने आहार, निद्रा, भय तथा मैथुन के रूप में वर्गीकृत किया है किन्तु इन दोनों को पृथक् करने वाला तत्व 'धर्म' संज्ञक है जो मनुष्य को सत्यासत्य, न्याय–अन्याय तथा कर्तव्य–अकर्तव्य की प्रतीति कराकर उसे सत्य, न्याय तथा स्वकर्तव्य में नियोजित करता है। तथापि मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति इस बात पर निर्भर है कि क्या वह अपने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा दुरितों को त्यागकर भद्रता को ग्रहण करने के लिए तत्पर है? सद्मार्ग की ओर बढ़ने और दुरित त्याग की प्रवृत्ति तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि वह इसके लिए उस परमात्मा से विनय न करे जो वस्तुतः उसका शास्ता, प्रेरक तथा धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देनेवाला है। वेदोदधि में विद्यमान सहस्रों मुक्तामणियों में से स्वामी दयानन्द ने एक ऐसा ही मन्त्र चुना जिस पर आचरण कर मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति के सोपान पर निरन्तर बढ़ता जाता है और अन्ततोगत्वा अपने अन्तःकरण को सर्वथा निर्मल बनाकर श्रेयपथ का पथिक बन जाता है। प्रसंगिक मन्त्र इस प्रकार है–

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।। यज. 30/6

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार किया है–"हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख दूर कर दीजिए। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कराइए।" (संस्कारविधिः सामान्य प्रकरण)

इस प्रकार ऋषि दयानन्द ने बताया कि आध्यात्मिक पथ का पथिक बनने वाले के लिए आवश्यक है कि वह सर्वप्रथम स्वयं को दुरितों और दोषों से दूर रखे, तत्पश्चात् स्वयं में सद्गुण, सत्कर्म तथा भद्रभावों का संचार करने के लिए परमात्मा से प्रार्थना ही नहीं करे, एतदर्थ पुरुषार्थ भी करे। इस मन्त्र को स्वामी जी ने वैदिक आचार शास्त्र का मूर्धास्थानीय कहा है तथा स्वयं के वाङ्मय में उसकी सभी महत्वपूर्ण प्रसंगों में योजना की है। यह दयानन्द का सर्वाधिक प्रिय मन्त्र है।

स्वामी दयानन्द की धार्मिक क्रान्ति– धर्माचरण से मनुष्य को अध्यात्म के पथ पर चलने की शक्ति मिलती है। स्वामी दयानन्द की दृष्टि में धर्म वह तत्व है जो सत्य और न्याय से युक्त है, जिसमें पक्षपात का लेशमात्र भी नहीं है तथा जिसे जानने के लिए वेदों का ज्ञान होना आवश्यक है। यह धर्म ही है जिसका मूल सच्ची आस्तिक भावना में निहित रहता है। स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया था कि आज सर्वत्र ईश्वर के स्थान पर जड़ तत्त्वों की पूजा हो रही है और सच्चिदानन्द लक्षणान्वित वेद–प्रतिपादित निराकार, निर्विकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक परमात्मा के स्थान पर पाषाण तथा धातु निर्मित मानवाकृति मूर्तियों को पूजा जा रहा है। इस जड़पूजा के प्रतिकार के लिए उन्होंने भारत के धर्म जगत् में एक

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

शिवभक्तो! कुछ सोचें!!!

● आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

शिवरात्रि पर्व का अनुष्ठान करते-2 कई शताब्दियाँ बीत गईं, पर इस अनुष्ठान के धूमधाम में यत्किञ्चित् भी व्यवधान व बाधा नहीं है। अनुष्ठान जैसे पहले होता था, वैसे आज भी है, कुछ अधिक ही है, न्यून का तो प्रश्न ही नहीं। भक्तगण शिवरात्रि का अनुष्ठान प्रतिवर्ष अति श्रद्धा, निष्ठा के साथ करते हैं। इस अनुष्ठान के अभीष्ट देव **शिव** हैं। इन अभीष्ट देव शिव को देश, प्रान्त के भेद से अनेक विभिन्न सम्बोधनों से संबोधित किया जाता है। ये **शिवजी काशी** में **बाबा विश्वनाथ** नाम से सम्बोधित हैं, तो **उज्जैन** में **महाकालेश्वर**। यह **महाकालेश्वर** नाम **शिव** का बहुत प्रतिष्ठित नाम है। इस प्रतिष्ठित **महाकालेश्वर** सम्बोधन की विशेषता में एक गर्वमयी लोकोक्ति प्रसिद्ध है-

काल उसका क्या करे? जो भक्त हो महाकाल।।

काल शब्द का अर्थ है- **काला रंग, समय, संहारक नियम आदि। महाकालेश्वर** का अर्थ है- **महांश्चासौ कालश्चेति महाकालः महाकालश्चासौ ईश्वरश्चेति महाकालेश्वरः,** अर्थात् **कालों का काल ईश्वर।** इस प्रकार लोकोक्ति का तात्पर्य हुआ महाकालेश्वर वह है, जो शत्रु, मृत्यु आदि को दूर कर भक्तों की रक्षा करता है, उनका कल्याण करता है।

उज्जैन के इस **महाकालेश्वर** की यह भी विशेषता है कि उनकी आराधना जहाँ बिल्व पत्र, गुलाब पुष्प, चावल, चन्दन, रोली, मौली, गुड़, दुग्ध आदि द्रव्यों से होती है, वहीं **श्मशान से लाई गई ताजी भस्म से भी होती है।** इस आराधना को **"भस्म आरती"** कहा जाता है। शिव महाकालेश्वर का यह भस्म आरती आराधन प्रातः 5 बजे होता है। श्मशान से भस्म लाने का कार्य व भस्म आरती करने का कार्य नरमुण्डधारी औघड़ का होता है। भस्म आरती के समय यजमान की पत्नी को वहाँ खड़े होने का अधिकार नहीं होता। मात्र यजमान, पुजारीगण एवं भस्म लाने वाला औघड़ वहाँ रहते हैं। वर्तमान में पुजारीगण ही भस्म आरती करते हैं, औघड़ एक तरफ खड़ा रहता है। भस्म आरती का यह तरीका है कि श्मशान से लाई गई लगभग 5-6 किलो भस्म वस्त्र में रखकर, वस्त्र की पोटली सी बनाकर शिवलिंग पर वह भस्म तब तक झाड़ी जाती है, जब तक पूरी की पूरी भस्म शिवलिंग पर न छन जाए। भस्म आरती करने से पूर्व शिवलिंग को खूब धोया, मांजा जाता है। चन्दन, रोली आदि से त्रिनेत्र आदि बनाये जाते हैं, पुष्प आदि भी चढ़ा दिये जाते हैं।

उज्जैन के मन्दिर में स्थित महाकालेश्वर को देखने के सन् 2004 से लेकर अब तक कई अवसर आये हैं। एक बार पुनः गत 5 नव. 2012 को भी महाकालेश्वर देखने का अवसर बन गया। **उज्जैन** स्थित **"महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान"** द्वारा 4,5,6,7 नव. 2012 को **"द्वितीय विश्व वेद सम्मेलन"** का आयोजन किया गया। जिसमें अनेकों वेदविदों ने भाग लिया, मैंने भी अपनी विशिष्ट भागीदारी निभायी। उज्जैन के स्थायी महाकालेश्वर के भक्तों तथा वेद सम्मेलन में पधारे भक्तों ने महाकालेश्वर की प्रशंसा के खूब पुल बाँधे। इतने दूर से आकर महाकालेश्वर को नहीं देखा, तो कुछ नहीं देखा, महाकालेश्वर को देखना अति कल्याणकारी है। एतादृश सबके आग्रह, अनुग्रह के कारण निरर्थक होते हुए भी 5 नव. 2012 को महाकालेश्वर स्थल में मुझे जाना ही पड़ा। पुनः रात्रि को **'महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान'** परिसर के कार्यक्रम स्थल पर सी.डी. द्वारा **"भस्म आरती"** का दृश्य भी सबने देखा। मन्दिर में तो भस्म आरती का दृश्य नारी जगत् नहीं देख सकता।

उज्जैन के इस महाकालेश्वर को **महाकवि कालिदास** ने **अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले,** मेघ. 1/34, **असौ महाकालनिकेतनस्य वसन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः,** रघु. 6/34, आदि प्रसंगों में मेघदूत व रघुवंश आदि ग्रन्थों के माध्यम से खूब अमर बनाया है।

महाकालेश्वर की इस सीरियल भस्म आरती को देखकर मेरा मन तो बुझ ही गया, ईश्वर के स्वरूप विषयक विचार भी चक्र प्रतिचक्र करने लगे। जिस शिव महाकालेश्वर की आराधना, उपासना दुःखों से छूटने के लिए की जाती है, जिसके अकाय, निराकार, सर्वव्यापक, चेतन, सच्चिदानन्द आदि विशेषण होते हैं, उसके साथ यह कैसी अशिष्टता=बदसलूकी है? ईश्वर की कृपा, ईश्वर का सान्निध्य आदि राख छानने से मिलती है, तब तो उदर भरने के लिए चूल्हे में जलायी गयी अग्नि की भस्म को छानने वाले उनकी अपेक्षा अति भाग्यशाली ही होंगे! जो दिन में 3-4 बार चूल्हे में अग्नि जलाते हैं और उसकी भस्म को इधर-उधर उठाते-रखते हैं।

शिवभक्तो! कुछ सोचें! अभी भी समय है! अनादि निराकार शिव ईश्वर की प्राप्ति न भस्म आरती से होती है, न अन्य पत्र, पुष्प आदि के समर्पण से होती है। उस जगन्नियन्ता परमात्मा शिव की प्राप्ति तो उसके प्रमुख नाम ओ३म्= प्रणव जप, चित्त की एकाग्रता तथा शास्त्र की स्वाध्याय से होती है। **योगदर्शन** के भाष्यकार **व्यास** कहते हैं-

तदस्य योगिनः प्रणवं जपतः प्रणवार्थं च भावयतश्चित्तमेकाग्रं संपद्यते। तथा चोक्तम्-

स्वाध्यायाद्योगमासीत् योगात् स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते।।

व्या. भा. योग. 1/28।।

अर्थात् उस ईश्वर से योग करने वाले जन का ओंकार जपते हुए और ओंकार के रक्षक आदि रूप अर्थ का अनुभव करते हुए चित्त एकाग्र हो जाता है। जैसा कि कहा है- **स्वाध्यायात्**= पवित्र ओ३म के जप करने तथा मोक्ष का उपदेश करने वाले शास्त्रों को पढ़ने से(**स्वाध्यायः प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं** वा, व्या. भा. योग. 2/1), **योगम् आसीत**= चित्तवृत्ति का निरोध करके उपासना करे (**योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**, योग. 1/2), एवं, **योगात्**= चित्तवृत्ति के निरोध से, **स्वाध्यायम्**= ओ३म के जप का, **आमनेत्**= अभ्यास करे (**म्ना भ्यासे**) । **स्वाध्याययोगसम्पत्त्या**= इस ओ३म जप तथा चित्तवृत्ति की **सम्पत्ति**= सिद्धि से, **परमात्मा प्रकाशते**= परमात्मा का प्रकाश होता है।

व्यास वचन से स्पष्ट है कि जिसके शिव, ओ३म् आदि का नाम है, वह ईश्वर तो प्रणव जाप, मोक्ष का उपदेश करने वाले शास्त्रों के पढ़न-पढ़ाने एवं मन की एकाग्रता से प्राप्त होता है। जो जन ईश्वर की प्राप्ति के लिए मूर्त्ति आदि का आश्रय लेते हैं और मूर्त्तिपूजा को मन के एकाग्र करने का साधन बताते हैं वे महती भ्रान्ति में हैं। मूर्त्तिपूजा से मन एकाग्र हो जाता है, यह मात्र उनकी मिथ्या अवधारणा है। व्यास ने तो मन के एकाग्र करने का साधन प्रणव जाप एवं प्रणव के रक्षा आदि अर्थ स्वरूप चिन्तन को बताया है।

परमात्मा के अनुग्रह, कृपा की प्राप्ति के लिए नम्रता, उदारता आदि गुणों को धारण करना भी आवश्यक होता है, इन गुणों से ईश्वर की जहाँ कृपा प्राप्त होती है, वहीं दुःखों के बन्धन भी टूट जाते हैं। वेद में कहा है-

मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत्।।

ऋ. 7/32/13।।

अर्थात् **अखर्वं सुधितम्**= अभिमान रहित (**खर्व दर्पे**), हितकारी, विनम्र, **सुपेशसं मन्त्रम्**= शोभनीय विचार को, **यज्ञियेषु आ दधात**= जीवन के समस्त उत्तम कार्यों में समर्पित करें, यतोहि, **यः कर्मणा**= जो इन यज्ञिय श्रेष्ठकर्मों से, **इन्द्रे भुवत्**= ऐश्वर्यशाली परमात्मा में स्थित होता है, **तं पूर्वीश्चन प्रसितयः**= ऐसे व्यक्ति को पुराने बन्धन, दुःख, बेड़ियाँ (**पिञ् बन्धने**), **तरन्ति**= छोड़ देती है।

मन्त्र का भाव है जो उदारता, नम्रता, निष्कपटता का व्यवहार करता है, उसे ही परमात्मा की समीपता, सायुज्यता की प्राप्ति होती है। परमात्मा की समीपता को प्राप्त व्यक्ति के दुःख, बन्धन, कष्ट, विपत्ति छूट जाते हैं व टूट जाते हैं। निरभिमानता व परमात्मा की समीपता के बिना दुःख, कष्ट, विपत्ति आदि नहीं छूटते।

शिव परमात्मा उनके ही कष्टों, दुःखों, बन्धनों, विपत्तियों आदि को दूर करते हैं, जो निरभिमान होकर शिव परमात्मा से समीपता बनाये रखते हैं। कणाद कहते हैं-

आत्मकर्मसु मोक्षो व्याख्यातः।

वैशे. 6/2/17।।

अर्थात् **आत्मकर्मसु**= उपासना आदि अध्यात्म कर्मों को करने पर मोक्ष कहा गया है।

वचन का तात्पर्य स्पष्ट है कि दुःख, विपत्ति आदि से छूटने के लिये **अध्यात्म कर्म**= आत्मा द्वारा किये जाने वाले उपासना, वैराग्य आदि कर्म ही बहुत बड़े साधन हैं, दुःखादि निवृत्ति के उपयुक्त उपाय हैं, पत्थर= पाषाण पूजन अर्चन नहीं।

कई शताब्दियों के पश्चात् वेद, दर्शन आदि शास्त्रों में विहित ईश्वर प्राप्ति के उपायों को जानने का **फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की शिवरात्रि** को सर्वप्रथम संकल्प **महर्षि दयानन्द** ने ही लिया। परम्परा से चली आ रही मूर्त्तिपूजा रूप ईश्वरार्चन पद्धति को उन्होंने एक झटके में उच्छिन्न कर दिया। अपने ज्ञान, तप, साधना द्वारा ईश्वर उपासना की उचित विधि ढूँढ निकाली। **महर्षि दयानन्द** ने

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

चरित्र निर्माण और युवक

● सुरेश कुमार शास्त्री

यदि उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य किसी बालक को मिल जाए तो उनकी शिक्षा से वह ज्ञानी विद्वान और चरित्रवान बनता है।

शत पथ ब्राह्मण में भी लिखा है– **मातृमान्, पितृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेदः।**

इसकी व्याख्या महर्षि दयानन्द इस प्रकार करते हैं कि–वह कुल धन्य है, वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता–पिता धार्मिक और चरित्रवान होते हैं। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना अन्य किसी से नहीं, इसलिए वह माता धन्य है तो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता चरित्र निर्माण का उपदेश करती है। अज्ञान के कारण मनुष्य की पापकर्म और बुराईयों में प्रवृति होती है। माता–पिता और गुरु पाप से बचा सकते हैं। ज्ञान चक्षु खुलने से ही बालक युवा होने पर चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान रख्ता है। इसलिए माता–पिता के आचारों–व्यवहारों का प्रभाव बालक पर विशेष ध्यान रूप से पड़ता है। माता–पिता चाहें तो बालक में शुद्ध संस्कार डालकर चरित्रवान महात्मा बना हैं। इसलिए बच्चों की भलाई बुराई का मूल साधारणतया माता–पिता ही हैं।

माता का प्रभाव, पिता तथा गुरुजनों से बढ़कर होता है। इसलिए कहा गया है कि माता निर्माता भवति अथर्त् बालक का असली निर्माण करती है। इसलिए कहा गया है कि–

उपाध्यायान् दशाचार्य, आचार्याणाम् शतं पिता,
सहस्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते।।

अर्थात् दक्षिणा लेकर पढ़ाने वाले अध्यापकों से दस गुणा प्रभाव आचार्य का होता है। आचार्य की शिक्षा से सौ गुणा प्रभाव पिता की शिक्षा का होता है। और माता की शिक्षा का प्रभाव पिता की शिक्षा से हजार गुणा से भी अधिक होता है। इसलिए कहा है–

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

यही माता–पिता का कर्तव्य और परमधर्म है कि अपनी सन्तानों को तन–मन–धन लगाकर विद्या, धर्म तथा सच्चरित्र से युक्त करना चाहिए। माता–पिता के पश्चात् गुरु आचार्य का स्थान है। आचार्य का अर्थ है– **आचारं ग्राहयति** अर्थात् सदाचार और चरित्र की शिक्षा देकर मानव जीवन का निर्माण करें। यदि आचार्य योग्य हो तो काया पलट देता है। शरीर की तीन अवस्थाएं होती हैं– बाल्यकाल, यौवन, वृद्धावस्था। जो बाल्यकाल से सच्चरित्रयुक्त रहता है, उसी के लिए युवावस्था में विवाह करने का विधान ऋषि लोगों ने किया है। किन्तु जो विवाह न करना चाहे तो वह मरणपर्यन्त ब्रह्मचारी रह सकते हैं। जो ब्रह्मचर्य से संन्यासी होकर संसार को सत्य शिक्षा देकर सदा उच्च चरित्र का निर्माण करके जितनी उन्नति कर सकता है उतनी उन्नति गृहस्थ और वानप्रस्थ से संन्यास लेकर संन्यासी नहीं कर सकता। इसलिए सदा ब्रह्मचारी यौवन में संन्यास लेकर चरित्र निर्माण का कार्य करे, तो देश की काया पलट सकती है। जैसे शराबी मुंशीराम को स्वामी दयानन्द ने महात्मा मुंशीराम और देश पर जान न्योछावर करने वाला स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। अत्यन्त पतित अमीचन्द के लिए स्वामी दयानन्द के मुख से यही शब्द निकले कि अमीचन्द तू है तो हीरा लेकिन कीचड़ में पड़ा हुआ है। इन शब्दों के सुनते ही अमीचन्द के सब दुर्व्यसन छूट गए और अमीचन्द यथार्थ में हीरा बन गया।

महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर रामप्रसाद बिस्मिल सब दुर्व्यसनों को तिलांजलि देकर सदाचारी देशभक्त बन गया। वेद में प्रार्थना की है कि **''अवन्तु नः पितरः सुवाचसः''** अर्थात् माता–पिता, गुरुजन तथा उपदेशक सब प्रकार से हमारी रक्षा करें और हम युवकों को चरित्रवान बनाए।

महापुरुषों की संगति और चरित्र निर्माण करने वाले धार्मिक साहित्य का स्वाध्याय ही युवकों को सदाचारी–चरित्रवान बनाता है। युवकों में उत्साह, जोश तो होता है परन्तु कर्तव्य निर्णयार्थ बुद्धि और होश नहीं होता। इसलिए उपरोक्त साधन अपनाकर युवकों को चरित्रवान बनाकर मानव जीवन को सफल बनाना चाहिए। कवि सम्राट वीरेन्द्र वीर ने युवकों को चेतावनी देते हुए कहा है कि–

जवानों जवानी में चलना जरा संभलकर,
आती नहीं है दोबारा निकलकर।
कठिन यह जवानी की मंजिल है यारो, कभी लखड़ा जाती है कुछ दूर चल कर।
विषय रूपी रहजन अनेकों मिलेंगे,
खबरदार कोई ले न जाए छल कर।
सुधर जाए परलोक जिससे यत्न कर,
जब आएगी मृत्यु न जाएगी टल कर।
''जिंदगी'' दिल है लुटाने की वस्तु,
लुटाया यह जिसने रहा हाथ मलकर।।

आर्य समाज बंगा
नवांशहर (पंजाब)

ऋषि बोध की सार्थकता

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

ऋषि बोधोत्सव पर कुछ नया करना चाहिए आज समाज में भी जागृति आ रही है भ्रष्टाचार, घोटाले, रिश्वतखोरी, बलात्कार व सभी प्रकार के अपराधों के विरुद्ध आवाजें उठने लगी हैं पहले लोग अपराधों को सहते रहते थे यौनापराधी, बलात्कारी, हत्यारे सिर उठाकर जनता के मध्य झूमा करते थे और अपराधों से ग्रस्त स्त्री–पुरुष समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बचाने के लिए चुप रहते थे परन्तु आज वह आवाज को छिपाते नहीं हैं अपितु सबके सामने उजागर कर देते हैं इसमें रेडियो, टीवी चैनल आदि मीडिया महत्वपूर्ण हैं, यहीं कारण है, कि अनेक नेता मंत्री संत्री तक की पोल खोली जा चुकी है और जनता के सामने उनका मुँह काला किया गया है जनता की इस आवाज के साथ आर्य समाज को भी आगे आना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने उस समय देखा कि अनेक राजा दुराचार व वेश्याओं के वशी भूत थे, जनता त्रस्त थी उन्होंने साधे उन राजाओं के मुंह पर खरी–खरी कह दी अर्थात् क्षत्रियों का संग शेरनियों के साथ होना चाहिए, वेश्याओं अर्थात कुतियों के साथ नहीं। उन्होंने अंग्रेजों को भी नहीं छोड़ा, स्वराज्य हेतु अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही उचित है यह देश आर्यों का है। पं. घासी राम द्वारा लिखित पुस्तक में महर्षि के लिए लिखा है कि ऋषि दयानन्द ने कुम्भ के मेले के अवसर पर नाना फड़नवीस, तात्यां टोपे, लक्ष्मी बाई, अली मुल्ला खां को राष्ट्र हेतु क्रान्ति का सन्देश दे उनके हृदय में स्वराज की चिंगारी प्रज्ज्वलित की थी। वह अन्ध विश्वासों व पाखण्डों के विरुद्ध खूब बोलते थे। समाज में जहां भी विकृति दिखाई देती वहीं पहुँच जाते थे। उस समय राष्ट्र परतन्त्र था भारतीयों पर अत्याचार हो रहे थे। उधर विदेशी ईकाई मिशनरियां हिन्दुओं का जोर–शोर से मतान्तरण कर रही थीं ऐसे में ऋषि दयानन्द ने भी पंजाब में इसके विरुद्ध कार्य किया और अनेक हिन्दुओं को मतपरिवर्तन से रोक दिया, रेवरण्ड जैसे इस कार्य से भयभीत हो गए थे। महर्षि दयानन्द की वाणी व भाव ऐसे होते थे कि लोग उनके शब्दों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सभी मतों की समीक्षा की और ऐसा मत मानने को कहा जिसमें किसी का विरोध न हो जो विरोधी बातें हैं उनको त्यागने को कहा जिससे विश्व मैं समानता हो सके परस्पर विरोध समाप्त हो सके विश्व शान्ति हेतु ही सत्यार्थ प्रकाश जैसा अमूल्य ग्रन्थ दिया, उनका किसी से कोई विरोध न था, ईर्ष्या थी वह जो बात कहते थे निरुपक्ष होकर कहते थे, जो सत्य व न्यायप्रिय होती थी, वह मुस्लिमों के स्थान पर भी बैठते थे। ईसाई मतावलम्बी उनको मानते थे। आर्य समाज के नियम लाहौर में मुसलमान के घर बैठ कर ही बनाए थे।

कहने का तात्पर्य यह है कि आज दयानन्द होते तो क्या करते जबकि पहले की अपेक्षा भारत में बहुत परिवर्तन है जब भारत परतन्त्र था अंग्रेजों की सत्ता थी। अन्ध विश्वास, पाखण्ड हिन्दुओं में बहुत थे। पौराणिकता के आधार पर हिन्दुओं को मुसलमान बजाया जा रहा था। ईसाई मिशनरियों का जाल भारत वर्ष में फैला हुआ था। न अपनी संसद थी न पुलिस थी। अंग्रेजों की सेना थी जो भारतीयों पर जुल्म कर रहे थे। आज अपनी सेना, अपनी पुलिस है अपनी संसद, अपना कानून है। आज भारत की सत्ता भारतीयों की है। आज बेधड़क आम आदमी अपनी बात कह सकता हे। फिर भी करने को बहुत कुछ शेष है आज गुरुडमवाद मतमतान्तरवाद की आंधी चल रही है। बलात्कार, भ्रष्टाचार सीमा से ऊपर हो रहे हैं। आदमी अधिकतर धन के लिए भूखे भेडिए की भांति हो गया है। दहेज हत्या, सीमा से अधिक धन संग्रह, प्रमाद के अत्यधिक साधन व उनका दुरुपयोग। जो धनी है वह अत्यधिक धनी होता जा रहा है। और निर्धन और भी निर्धन हो रहा है। रिश्वत खोरी, भ्रष्टाचार थम नहीं रहे। चुनाव की राजनीति ने राष्ट्र को उठाकर एक ओर रख दिया है। जहां ऊंचनीच–जातिवादी अमीर–गरीबी दुराचार जैसी समस्याएँ दूर होनी चाहिए थी वह और बढ़ रही है। चुनावों में जातिगत मतमतान्तर सम्बधित गणनाएं तय की जाती हैं। महर्षि दयानन्द इन विसंगतियों को अनदेखा नहीं करते और आज देश की स्थिति कुछ और ही होती।

महर्षि के बाद देश में गांव–गांव

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

अणु तस्करी प्रकरणों के पीछे पाकिस्तानी हाथ

● हरिकृष्ण निगम

जब भारत के संवेदनशील व गोपनीय आणविक आंकड़ों व सूचनाओं की जानकारी खाड़ी के देशों को एक मिलियन डॉलर में बेचने की पेशकश की गई थी।

आज बहुधा हमारे अनेक प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में, विशेषकर अंगेजी मीडिया के एक प्रभावी वर्ग में बड़े जोर–शोर से कुछ खोजी पत्रकारों द्वारा कथित शोधपूर्ण सनसनीखेज खुलासे किए जाते हैं पर उसके बाद कुछ दिनों में ही उस विषय पर एक शब्द भी नहीं प्रकाशित होता है। इसके विपरीत पश्चिमी मीडिया में उन पर तथ्यपूर्ण सम्बंधित उल्लेख बाद तक तत्परता से अभिलेखित कर प्रकाशित किए जाते हैं।

ऐसा ही कुछ वर्षों पहले तब हुआ था जब यह समाचार प्रकाशित हुए थे कि भारत के आणविक गोपनीय रहस्य दुबई के एक व्यवसाई द्वारा खाड़ी के एक देश को बेचे जा रहे हैं इसके पीछे भी पाकिस्तानी आई.एस. आई.के हाथ होने की सम्भावना जताई गई थी।

35 वर्षीय दुबई के एक नागरिक अख्तर हुसेन कुतुबुद्दिन को देश की अणु सम्बन्धी गुप्त सूचनाओं को पाकिस्तान के अन्तर्राष्ट्रय आणविक तस्करी के अवैध नेटवर्क को देने के आरोप मे मुम्बई में गिरफ्तार भी किया गया था। उस समय पाकिस्तान के अणुबम के कुख्यात जनक अब्दुल कादिर खान की दुबई केन्द्रित अणु–उपकरणों की तस्करी के विषय में अंतरराष्ट्रीय प्रेस में कई खुलासे हो चुके थे ईरान, उत्तरी कोरिया और लीबिया जैसे देशों को अणु टेकनोलाजी बेचने व अणु संयंत्रों का डिजाइनों व संवर्धित या 'एनरिच्ड' यूरेनियम की चर्चा पश्चिमी प्रेस में हो चुकी थी। अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया यह भी स्पष्ट कर चुका था कि डॉ.ए.क्यू. खान रिसर्च लैबोरेटरीज के वैज्ञानिक एक समय अपकेन्द्रित संघटक–सेन्ट्रीफ्यूजेस काम्पोनेन्ट – अमेरिका के शत्रुदेशों जैसे ईरान, लीबिया या उत्तरी कोरिया के वैज्ञानिकों से गुप्तवार्ता करने के बाद फिर पाकिस्तान के मालवाहक सी – 30 जैसे विशाल विमानों द्वारा कलपुर्जे, डिजाइन, व उपकरण, सरकार के सहयोग से वहां भिजवाते थे। इस्लामी बम के जनक के रूप में अपनी बनाई छवि का वह पूरा लाभ उठाते थे। अब वे स्वयं अपने पुराने वक्तव्यों को सत्यापित कर फिर कह रहे हैं उन देशों को आणविक टेकनोलॉजी का हस्तान्तरण बेनजीर भुट्टो के आदेश पर किया गया था। उन्होंने माना कि जनरल मुशर्रफ के साथ–साथ पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर, पूर्व सेना प्रमुख मिर्जा असलम बेग और जहांगीर करामत के हर आणविक षड्यंत्र में वे किसी न किसी रूप में शामिल थे। अमेरिका अपने स्वार्थवश जनरल मुशर्रफ को इस खेल में बेदाग मानने का नाटक कर रहा था जबकि खान लेबोरेटरीज पाकिस्तान के सरकारी आणविक कार्यक्रम का अभिन्न अंग मानी जाती रही है। जब सत्तर के दशक के उत्तरार्ध में डा. खान ने एक योरोपीय कान्सोर्शियम 'यूरेन्को' से संवर्धित यूरेनियम की मूल टेकनोलॉजी चुराई थी, जो नीदरलैण्ड में स्थित एक डच ब्रिटिश कम्पनी थी, तब 1976 में वैज्ञानिकों में हलचल मच गई थी, क्योंकि वह पाकिस्तान में पहुंच गई थी। भौतिक क्षेत्र के वैज्ञानिक कहते हैं कि डॉ. खान अणु वैज्ञानिक कभी नहीं थे, वे मात्र एक धातुविद् या मेटेलर्जिस्ट थे पर 'सेन्ट्रीफ्यूजेज' की डिजाइनों की इस चोरी के बाद उन्हें एक अणुवैज्ञानिक की छवि दी गई थी। 1998 के भारतीय आणिवक परीक्षण की प्रतिक्रिया के कारण पाकिस्तान अब डॉ. खान की इस नई छवि को और बढ़ाने में लग गया था और अब जब पाकिस्तान के इस्लामी बम का प्रचार मुस्लिम देशों में चरम सीमा पर पहुंच गया था तब यह तथ्य उजागर हुआ था कि उत्तरी कोरिया को गुप्त आणविक टेकनोलाजी का हस्तान्तरण मुख्य रूप से सन 2000 तक, 1989 और 1991 तक ईरान को और 1991 से लेकर 1997 तक यह गल्फ के कई देशों तक पहुंचाई जा रही थी। भारत के आणविक कार्यक्रमों व कश्मीर नीति के विरुद्ध दुष्प्रचार कारण घृणा का वातावरण बनना सहज था।

जैसा प्रारंभ में इंगित किया है। भारतीय आणविक कार्यक्रमों की गोपनीयता में एक समय सेंध लगाने की कोशिश हो चुकी थी जब गल्फ देशों में एक मिलियन डालर के बदले अख्तर हुसेन नामक व्यवसाई के जुड़े होने की खबर प्रकाशित हुई थी। उस समय भाभा अणु शोध केन्द्र (बी.ए. आरूसी.) के कुछ वैज्ञानिकों ने जासूसी की सम्भावना पर स्पष्ट टिपपणी की थी। उस समय यह भी समाचार प्रकाशित हुए थे कि भारतीय अधिकारियों द्वारा एयर इण्डिया की उड़ान क्रमांक ए. आई–716 द्वारा दुबई से मुम्बई लाकर तुरन्त इन्टेलिजेन्स ब्यूरो के अधिकारियों द्वारा लगभग 10 घंटे तक पूछताछ की गई थी। अणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष एम.आर.श्रीनिवासन ने मात्र यह संक्षिप्त वक्तव्य दिया था कि ऐसे साक्ष्य मिले हैं कि दुबई में एक ऐसा नेटवर्क है जो देश की सुरक्षा के लिए खतरा सिद्ध हो सकता है। वस्तुतः मई 1998 के पोखरण के परीक्षण के बाद से ही यह शुरू हो चुका था। उसके बाद हमारा मीडिया तो लगभग इस बात को भूल गया पर पश्चिम के खोजी पत्रकारों व अमेरिकी मीडिया ने इस प्रकरण की श्रृंखला में विस्तार से समाचार देना नही छोड़ा। यह भी जानकारी प्रकाशित हुई थी कि यूनाईटेड अरब अमीरात के भारत स्थित राजदूत से भी अख्तर हुसेन ने सम्पर्क साधने का प्रयास किया था इसी अख्तर का एक भाई अहमद हुसेन भाभा आणविक शोध केन्द्र में एक वैज्ञानिक के रूप में काम करता था। फिर यह सूचना आई कि इस नाम का कोई वैज्ञानिक नहीं है और उसकी पहचान पर विवाद उठे। यदि अख्तर हुसेन विखंडय तत्वों या 'फिसाइल मेटीरियल' के आंकड़ों को बेचने की पहल कर रहा था तब स्थिति वस्तुतः संवेदनशील व खतरनाक थी। जांच की ये खबरें एक–दो बार अवश्य छपी पर शीघ्र ही मीडिया द्वारा भी देश में भुला दी गई।

जब अमेरिकी मीडिया में ''क्या भारत के आणविक रहस्य गल्फ में एक मिलियन डॉलर में बेचे जा रहे हैं?'' और ''एक मिलियन डॉलर में खाड़ी के देश में आणविक रहस्यों की बिक्री? इन शीर्षकों में समाचार प्रकाशित हुए तब भी हमने अपनी प्रतिक्रिया नहीं जताई! इसके बाद जब न्यूयार्क टाइम्स के वाशिंगटन संवाददाता डेविड सागर की पुस्तक 'कन्फ्रन्ट एण्ड कन्सील' प्रकाशित हुई तब यह भी खुलासा हुआ कि स्वयं राष्ट्रपति ओबामा को 2009 में एक गुप्त स्रत से ज्ञात हुआ था कि तालिबान के नेतृत्व के हाथ अणुबम लग चुका है। तहरीके–तालिबान पाकिस्तान व वहां की पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सियों के बीच बातचीत व संदेशों को सी. आई.ए. के गुप्तचरों ने पकड़ लिया था जिसमें कुछ अमेरिकी शहरों पर संभावित अणु आक्रमणों की चर्चा थी। इसके बाद से पाकिस्तान के अणु आयुधों की सुरक्षा व उनकी स्थिति आदि पर अमेरिका सतर्क हो गया था और उन पर नियंत्रण के लिए चौकन्ना हो गया था।

जहां अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस 'न्युक्लियर स्पाई' की खोज अमेरिकी एजेन्सियां खाड़ी के देशों व पाकिस्तान में भी अपनी तरह से कर रही थीं, भारत में मुम्बई से जुड़े इस गिरोह की जासूसी के बारे में सामान्य पाठकों को कुछ नहीं पता चला। सिर्फ यही दोहराया गया कि भाभा आणविक शोध केन्द के 15000 से अधिक कर्मचारियों में अहमद हुसेन या अख्तर हुसेन की पहचान सत्यापित करना सहज नहीं है। जबकि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश आणविक तस्करी व भयादोहन में स्वयं दुबई के बुहारी सैयद अबू ताहिर और मलेयशिया से लेकर पाकिस्तान के कुख्यात वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कादिरखान का नामले चुके थे। वे लीबियाई अणु और वे लीबिया अणुवैज्ञानिकों से कैसा ब्लांक मोरक्को और इस्तानबुल में मिलते थे और लीबिया की राजधानी त्रिपोली से बचते थे इसी तरह ईरानी वैज्ञानिकों से कराची या कुआलालम्पुर में मिलना पसंद करते थे।

डॉ. खान की गतिविधियों में अनेक मध्यस्थ, हथियारों के अन्तर्राष्ट्रीय सौदागर और बिचौलिये भी थे। डॉ. खान मलयेशिया की एक फैक्टरी से 'सेन्ट्रीफ्यूज' खरीदते थे जो ताहिर नामक व्यक्ति के द्वारा किया जाता था, जो श्रीलंका का नागरिक था। ताहिर आज मलेयशिया की जेल में हैं। अक्टूबर 2000 में जब 'सेन्ट्रफ्यूजों' के संघटक या 'काम्पोनेन्ट' दुबई होकर लीबिया भेजे जा रहे थे, बीच में ही पकड़ लिए गए थे। वह जहाज स्वेज नहर होकर जा रहा था। तब जर्मन व इतालवी अधिकारियों ने उसे शक में पकड़ा था। जहाज में लगभग 40 फीट लम्बाई के अनेक कन्टेनर थे जिसमें पुरानी मशीनों के होने की बात से गुमराह किया गया था। पर वे वस्तुतः सेन्ट्रीफ्यूजस निकले।

दूसरे कुछ बिचौलियों के भी नाम सामने आए हैं जो डॉ. कादिर खान का काम करते थे। उनकी पहचान उनके अन्तिम नामों से की गई है और वे तीनों जर्मन थे ब्रूमर, हाइंज और लीख उनके नाम थे और जिसमें डच मूल का ''हैक्स'' नामक व्यक्ति भी शामिल था। इस व्यक्ति के सम्बन्ध 'युरेन्को' से थे जहां डॉ. खान एक समय काम करते थे। एक बात और सामने आई है कि जब नवम्बर 2003 में पाकिस्तान सरकार के जांच कर्ताओं ने आणविक टेकनोलॉजी हस्तान्तरण के सम्बन्ध में ईरान से सम्पर्क साधा तब डॉ. खान ने ईरानी अधिकारियों को एक गोपनीय पत्र लिखा था कि वे उनके सम्बन्धों के सबूत नष्ट कर दें। वे उनको पाकिस्तान को यह बताने के लिए भी सलाह दे रहे थे कि जो प्रमुख लोग इस कार्यक्रम से जुड़े थे वे मर चुके हैं। इतना ही नहीं डॉ. खान ने सन 2001 में अपने अधीन काम करने वाले एक वैज्ञानिक को धमकी भी दी थी कि टेकनोलॉजी हस्तान्तरण की सूचना यदि वह किसी को देगा तो उसकी हत्या कर दी जाएगी।

खुफिया एजेन्सियों ने डॉ. खान के पहले प्रमुख स्टाफ आफिसर रहे इस्लामुल हक को भी गिरफ्तार किया है। रूसी सुरक्षा मंत्री सरगई इवानोव जो कुछ वर्षों पहले दिल्ली आए थे उन्हें काफी अरसे से ज्ञात था कि पाकिस्तान कई देशों को आणविक टेकनोलाजी भारत के विरूद्ध दुष्प्रचार के साथ दे चुका है जो दुनियाँ केलिए आगे चल कर खतरा बन सकता है। डॉ. खन की भूमिका ने यह भी सिद्ध कर दिया कि अणु आयुधों के सौदागर की एक सशक्त अन्तर्राष्ट्रीय लॉबी व अवैध बाजार है और जिसका पूरा फायदा उन्होंने उठाया। हाल के एक दूसरे महत्वपूर्ण समाचार के अनुसार आणविक 'ट्रिगर्स' के लिए जरूरी

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

☞ पृष्ठ 4 का शेष

ऋषि दयानन्द ...

नवीन धर्म क्रान्ति का प्रवर्तन किया। इसके द्वारा उन्होंने सामन्यतया मनुष्यमात्र को, और विशेष रूप से भारत के निवासी आर्यों को सन्देश दिया कि वे जड़ वस्तुओं की पूजा का त्याग करें और अप्रतिम बलशाली, यश के धाम उस परमात्मा की आराधना करें जिसकी कोई प्रतिमा या प्रतिकृति नहीं है और न किसी स्थूल प्रतीक के द्वारा उसे जाना जाता है। इस धार्मिक क्रान्ति के मूल में उन्होंने यजुर्वेद के (32/2) मंत्र के तत्त्वार्थ को देखा जो स्पष्ट घोषणा करता है कि महान् यशवाले परमात्मा की कोई प्रतिमा या प्रतिकृति नहीं है। यह सर्वत्र व्यापक परमात्मा वेदों के जिन अन्य मन्त्रों में स्मृत तथा व्याख्यात है उनकी प्रतीकें इस मन्त्र के द्वितीयार्द्ध में दी गई हैं। ये परमात्मा प्रतिपादक मंत्र हैं–

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (यजु. 13/4)

अर्थात् सकल जगत् का उत्पादक परमात्मा सृष्टि के वर्तमान रूप में आने के पूर्व स्वसत्ता से विद्यमान था। उसी ने पृथ्वी तथा द्यौ आदि लोकों को स्वशक्ति से धारण किया है। मनुष्य को चाहिए कि वह उस सुख स्वरूप परमात्मा की उपासना अति प्रेम व विशेष भक्ति से करे। ध्यान रहे कि जब स्वामी दयानन्द से मूर्तिपूजा के खण्डन में किसी वेदमंत्र का प्रमाण मांगा गया तो उन्होने उपर्युक्त मंत्र को प्रस्तुत किया और दृढ़तापूर्वक बताया कि महान् यशवाले, सर्वव्यापक परमात्मा की कोई आकृति या मूर्ति नहीं है।

एक अन्य मंत्र जिसका संकेत आलोच्य मन्त्र में है, वह भी यजुर्वेद (8/36) का ही मंत्र है–

यस्मान्न जातः परोऽअन्योऽस्ति य आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणे ज्योतींषि सचतेस षोडशी।।

अर्थात् जिस परमात्मा से बड़ा या तुल्य कोई दूसरा नहीं जो समस्त लोकों को स्वयं के भीतर समाये हैं तथा स्वयं भी इन भुवनों में प्रविष्ट हैं, वह प्रजापति परमात्मा अपनी प्रजा में रम रहा है। उसी से सोलह कलाओं का जन्म हुआ है। ऋषि दयानन्द के अनुसार ये कलाएं हैं 1 ईक्षण (विचार) 2 प्राण, 3 श्रद्धा, 4 आकाश, 5 वायु, 6 अग्नि, 7 जल, 8 पृथिवी, 9 मन, 10 अन्न, 11 वीर्य (पराक्रम), 12 तप (धर्म का अनुष्ठान), 13 मंत्र (वेद विद्या), 14 कर्म (चेष्टा), 15 लोक, 16 नाम।

इस प्रकार निराकार, अमूर्त, सर्वशक्तिमान ईश्वर के वेदोक्त स्वरूप का पदे–पदे प्रतिपादन कर स्वामी दयानन्द ने धर्म जगत् में अभूतपूर्व क्रान्ति की। इसी का परिणाम रहा कि धर्म के नाम पर पनपने वाले अन्धविश्वासों तथा धर्मान्धतापूर्ण कृत्यों पर रोक लगी, विचारशील लोगों ने अनुभव किया कि धर्म ओर बुद्धिवाद में कोई विरोध नहीं है। वस्तुतः युक्ति और तर्क के द्वारा ही वास्तविक धर्म का अनुसन्धान किया जा सकता है। (दृष्टव्य–मनुस्मृति)

ऋषि दयानन्द की सामाजिक क्रान्ति

परम निःस्पृह अवधूत दयानन्द ने समसामयिक भारत में सामाजिक चेतना को प्रायः विलुप्त अथवा अर्द्धमूर्छित अवस्था में देखा था। वेदों में जिस सुसंगठित, शक्ति सम्पन्न तथा बलशाली समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी उसे किस प्रकार पुनः मूर्तिमान किया जा सकता है तथा समाज के विभिन्न घटकों के बीच में आये अविश्वास विद्वेष तथा शत्रुता के भावों को समाप्त कर सामंजस्य के भावों को कैसे पैदा किया जा सकता है, इसे वे भली–भांति जानते थे। स्वामी दयानन्द ने व्यक्ति तथा परिवार के सुसंगठित निर्माण को बलशाली समाज संरचना की आवश्यक कसौटी बताया था। भारतीय समाज में मध्यकाल में जो दुर्बलता आ गई थी उसका एक कारण रहा था वर्ण विद्वेष का पनपना, साथ ही स्पृश्यास्पृश्य की भावना, एक वर्ण का अन्यों की अपेक्षा स्वयं को ऊंचा मानना, जात्याभिमान के कारण तथाकथित निम्न वर्ग के लोगों के सामाजिक तथा धार्मिक अधिकारों का अन्यों द्वारा अपहरण आदि। यह स्थिति इतनी विकृत हो गई थी कि परमात्मा की कल्याणी वाणी, वेदों के पठन–पाठन का अधिकार वर्ग विशेष ने स्वाधिकृत कर रखा था। यदि भूल–चूक से कोई द्विजेतर व्यक्ति वेदों का उच्चारण, अध्ययन, मनन आदि करने की धृष्टता करे तो उसके लिए भयंकर दण्ड का विधान किया गया था। इस विषम स्थिति को समाप्त कर समाज में पुनः सामंजस्य तथा समरसता की भावना को उत्पन्न करने के लिए ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट घोषणा की और बताया कि वेद परमात्मा की कल्याणी वाणी हैं जिसके पठन–पाठन, अध्यापन तथा मनन–चिन्तन पर मनुष्यमात्र का अधिकार है। सामाजिक समता का उद्घोष उन्होंने यजुर्वेद के निम्न मंत्र को प्रस्तुत कर किया–

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभयाम् आदि।।

दयानन्द ने जिस सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात किया वह बहुआयामी थी। इसके द्वारा एक ओर जहां सामाजिक कुरीतियों का उच्छेद हुआ, वहां बहुधा विभक्त भारतीय समाज ने व्यक्तिहित से आगे बढ़कर समष्टिहित की बात सोचना आरम्भ किया। मध्यकालीन समाज के नेताओं ने अपने संकीर्ण चिन्तन के द्वारा जहां व्यक्ति के हित और स्वार्थ को सर्वोपरि माना वहां स्वामी दयानन्द ने व्यक्ति और समाज के समन्वित और सन्तुलित विकास की बात कही। आर्यसमाज का नवां तथा दसवां नियम व्यक्ति और समाज के पारस्परिक हित साधन के लिए एक–दूसरे पर निर्भर होने की बात करते हैं। व्यक्ति स्वयं के हित के लिए जब प्रयत्नशील हो उस समय भी वह व्यापक सामाजिक हित को सर्वथा ओझल न होने दे। इस प्रकार व्यक्ति और समाज की भलाई अन्योन्याश्रित है। इसी में व्यक्ति और समाज के अधिकारों और कर्तव्यों का समन्वित विकास और रक्षण सम्भव है। दयानन्द द्वारा लाई गई सामाजिक क्रान्ति को समाजशास्त्रियों और इतिहासकारों ने विस्तार से विवेचित किया है।

दयानन्द प्रवर्तित राष्ट्र क्रान्ति–स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रोत्थान का मार्ग सुझाया और बताया कि वेदोपदिष्ट सप्त सूत्रों के सम्यक् धारण के द्वारा हम अपने राष्ट्र का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। अथर्ववेद के भूमिसूक्त (12/9) का प्रथम मंत्र पृथ्वी के आधरभूत जिन तत्त्वों को उल्लिखित करता है उनके द्वारा किसी भी राष्ट्र को उन्नति के पथ पर चलाया जा सकता है। दयानन्द के क्रान्तिकारी चिन्तन की यह विशेषता रही है कि वे भारत के निवासी अपने सहनागरिकों को पदे–पदे चेताते रहे और उन्हें कहते रहे कि जिस धरती के द्वारा प्रदत्त अन्न और जल से उनका शरीर पोषित और पुष्ट हुआ है उस मातृभूमि के प्रति उनका क्या दायित्व और कर्त्तव्य है? दयानन्द की यह राष्ट्र की आराधना प्राणवान तथा प्रेरणादायिनी सिद्ध हुई। भारतवासियों ने दयानन्द द्वारा प्रदत्त स्वराज्य के सन्देश को सुना और तदनुसार संघर्ष कर स्वाधीनता प्राप्त की। दयानन्द के स्वराज्य चिन्तन की यह विशेषता थी कि उन्होंने देशवासियों को न केवल पराधीनता के अभिशापों से परिचित कराकर उनसे मुक्त होने के लिए कहा, अपितु चेतावनी भरे स्वर में सावधान किया कि अनेक कठिनाइयों, त्याग एवं बलिदान से उपार्जित स्वतन्त्रता को भी तब तक स्थायी बनाकर नहीं रखा जा सकेगा जब तक देशवासी स्वयं में राष्ट्रीय चरित्र का विकास न कर लें तथा उन दोषों, दुर्गुणों और बुराइयों से सर्वथा दूर न हो जाएं जिनके कारण विगत में उन्हें पराधीन बनना पड़ा था। दयानन्द ने सामाजिक सुदृढ़ता तथा समष्टि के स्वास्थ्य को सुदृढ़ एवं बलवान राष्ट्र का प्रधान कारण माना था।

दयानन्द प्रवर्तित विश्व मानवतावाद–वस्तुतः दयानन्द का क्रान्तिकारी चिन्तन मानवमात्र के हित और कल्याण को लक्ष्य में रखता है। वे वेदों के आधार पर मानव के व्यापक हित की बात करते हैं, जिस वेद ने मनुष्य ही नहीं, प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश दिया, जहां सम्पूर्ण विश्व को मानव के विश्राम देने वाला सुखद नीड़ बताया गया है और जहां सभी दिशाओं में मैत्री के सूत्र तलाशे गये हैं, उस विश्व संस्कृति का प्रचार ही स्वामी दयानन्द को इष्ट था। दयानन्द की दृष्टि में **मानव वह है जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा, निर्बल से भी डरता रहे।** दयानन्द की दृष्टि में वेदों की शिक्षा इसी व्यापक मानवता का आख्यान है।

संसार में ऐसे महापुरुषों का अभाव नहीं रहा जिन्होंने मानव जाति के उत्थान के लिए किसी एक क्षेत्र को चुना तथा अपने द्वारा दिये गये कर्तव्यबोध से व्यक्ति तथा समाज की आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति को सिद्ध किया। स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी चिन्तन की यह विशेषता रही कि इसके द्वारा वे समाज में एक साथ बहुआयामी परिवर्तन ला सके।

8/423, नन्दवन, जोधपुर (राजस्थान)

ईश्वरप्रणिधान का अर्थ

1 ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति होना।
2 ईश्वर को ही सर्वाधिक प्रिय मानना, उससे अधिक प्रिय किसी को नहीं मानना।
3 ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल अपना आचरण करना।
4 ईश्वर को अपने आगे–पीछे, बायें–दायें, ऊपर–नीचे, अन्दर–बाहर, सर्वत्र व्यापक मानते हुए कार्य करना।
5 मन–शरीर और वाणी से की जाने वाली समस्त क्रियाओं को ईश्वर समर्पित कर देना तथा उसका कोई लौकिक फल (मान–सम्मान–धन) की इच्छा न करना।
6 ईश्वर के सही स्वरूप को जानकर उसके मुख्य नाम ओम् का अर्थ सहित जप करना।
7 ईश्वर प्रणिधान की इस प्रक्रिया से सरलता से समाधि की प्राप्ति एवं ईश्वर का साक्षात्कार होता है तथा ईश्वर के दिव्य आनंद की अनुभूति होती है।

☞ पृष्ठ 5 का शेष

शिवभक्तो! कुछ....

उस **परब्रह्म ईश्वर की उपासना विधि** का प्रतिपादन **सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास** में किया है। उस **उपासना विधि** का **अन्नमय, प्राणमय, मनोमन, विज्ञानमय, आनन्दमय पञ्चकोशों का विवेचन, वैराग्य= विवेक से सत्यासत्य का जानना, शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान यह षटक् सम्पत्ति, श्रवण, मनन निदिध्यासन, साक्षात्कारम ये श्रवण चतुष्टय आदि प्रमुख साधन हैं।**

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट उपासना के इन साधनों को अपनाने पर असत्य, अज्ञान, अंधकार, अधर्म आदि दूर हो जाते हैं, सत्य, धर्म, ज्ञान, यथार्थ आदि जीवन के अंग बन जाते हैं। परमेश्वर का उपासक शान्त, दान्त, आनन्दयुक्त होता है, सच्चरित्र बनता है।

आज **चरित्र भ्रष्टता** सर्वत्र विद्यमान है। **चरित्र भ्रष्ट** होने के जहाँ अन्य कारण हैं, उनमें **साकार पूजा** भी बहुत बड़ा कारण है। **महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की साकार पूजा के 16 दोष गिनाये हैं, उनमें चरित्र भ्रष्टता को भी गिनाया है।** वे लिखते हैं–

पहला–साकार में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता, क्योंकि उस साकार को मन झट ग्रहण करके उसी के एक–एक अवयव में घूमता और दूसरे में दौड़ जाता है। और निराकार अनन्त परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है, तो भी अन्त नहीं पाता। निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता, किन्तु उसी के गुण, कर्म, स्वभाव का विचार करता–करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है। और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता है, क्योंकि जगत् में मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र, आदि साकार में फंसा रहता है, परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक निराकार में न लगावें, क्योंकि निरवयव होने से उसमें मन स्थिर हो जाता है। इसलिए मूर्तिपूजा करना अधर्म है।

दूसरा–उसमें करोड़ों रुपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उसमें प्रमाद होता है।

तीसरा–स्त्री–पुरुषों का मन्दिरों में मेला होने से व्यभिचार, लड़ाई, बखेड़ा और रोगादि उत्पन्न होते हैं।

चौथा–उसी को धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति का साधन मान के पुरुषार्थ रहित होकर मनुष्यजन्म व्यर्थ गवांता है।

पांचवां–नाना प्रकार की विरुद्धस्वरूप, नाम, चरित्रयुक्त मूर्त्तियों के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होकर विरुद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढ़ा कर देश का नाश करते हैं।

छठा–उसी के भरोसे में शत्रु का पराजय और अपना विजय मानकर बैठे रहते हैं। उनका पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्र्य और धन का सुख उनके शत्रुओं के स्वाधीन होता है और आप पराधीन भटियारे के टट्टू और कुम्हार के गदहे के समान शत्रुओं के वश में होकर अनेकविधि दुःख पाते हैं।

सातवां– जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन व नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता व गाली प्रदान कर देता है, वैसे ही जो परमेश्वर की उपासना के स्थान पर हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्तियाँ धरते हैं, उन दुष्टबुद्धि वालों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करे?

आठवां–भ्रान्त होकर मन्दिर–मन्दिर देश–देशान्तर में घूमत–घूमते दुःख पाते, धर्म, संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते, चोर आदि से पीड़ित होते, ठगों से ठगाते रहते हैं?

नववां–दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या, परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, लड़ाई, बखेड़ों में व्यय करते हैं, जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है।

दसवां–माता–पिता आदि माननीयों का अपमान कर पाषाणादि मूर्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं।

ग्यारहवां–उन मूर्तियों को कोई तोड़ डालता व चोर ले जाता है, तब हा हा करके रोते रहते हैं।

बारहवां–पुजारी परस्त्रियों के संग और पुजारिन् परपुरुषों के संग से प्रायः दूषित होकर स्त्री–पुरुष के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं।

तेरहवां–स्वामी सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरुद्धभाव होकर नष्ट–भ्रष्ट हो जाते हैं।

चौदहवां–जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि हो जाता है, क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तःकरण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है।

पन्द्रहवां–परमेश्वर ने सुगन्धियुक्त पुष्पादि पदार्थ वायु, जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिए बनाये हैं, उनको पुजारी जी तोड़ताड़ कर, न जाने उन पुष्पों की कितने दिन तक सुगन्धि आकाश में चढ़कर वायु, जल की शुद्धि करता और पूर्ण सुगन्धि के समय तक उसका सुगन्ध होता, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल–सड़कर उलटा दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। क्या परमात्मा ने पत्थर पर चढ़ाने के लिए पुष्पादि सुगन्धियुक्त पदार्थ रचे हैं?

सोलहवां–पत्थर पर चढ़े हुए पुष्प, चन्दन और अक्षत आदि सब का जल और मृत्तिका के संयोग होने से मोरी व कुण्ड में आकर सड़ कर इतना उससे दुर्गन्ध आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का। और सहस्रों जीव उसमें पड़ते उसी में मरते और सड़ते हैं। ऐसे–ऐसे अनेक मूत्तिपूजा करने के दोष में आते हैं। इसलिए सर्वथा पाषाणादि मूर्तिपूजा सज्जन लोगों के त्यक्तव्य है और जिन्होंने पाषाणमय मूर्ति की पूजा की है, करते हैं और करेंगे, वे पूर्वोक्त दोषों से न बचे, न बचे हैं और न बचेंगे।

सत्या. एका. पृ. 297–298।।

इस प्रकार **महर्षि दयानन्द** ने **निराकार ईश्वर** का सन्देश देकर शिवरात्रि भक्तों का अहोभाग्य जगाया है। ईश्वर भक्ति का सही मार्ग दिखाया है। चरित्र निर्माण की उत्तम शिक्षा दी है। **1. मन की अस्थिरता, मूर्तिपूजारूप अधर्म, 2. दरिद्रता, प्रमाद, 3. व्यभिचार, 4. पुरुषार्थ रहित मनुष्यजन्म की निरर्थकता, 5. आपसी फूट, विरोध, 6. पराधीनता, 7. ईश्वर के दण्डरूप सत्यानाश, 8. भ्रान्तिदुःख धर्मादि व परमार्थ का नाश ठगाना, 9. परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, 10. माता, पिता के प्रति कृतघ्नता, 11. मूर्ति भग्नता व चोरी पर रुदन, 12. पुजारी जनों के परस्त्री–पुरुषों के परस्पर संयोग से आनन्द का खोना, 13. स्वामी सेवक के परस्पर विरुद्ध होके नष्ट होना, 14. आत्मा पर जड़त्व धर्म का अवश्य आना, 15. पुष्पादि की सड़न से दुर्गन्ध उत्पन्न करना, 16. पुष्प, चन्दन, अक्षत आदि में जल, मूर्तिका के संयोग द्वारा उठी दुर्गन्ध से आकाश को दूषित करना,** मूर्तिपूजा के इन 16 दुःखें से बचाया है।

कल्याणकारी, शिव, निराकार ईश्वर की कृपा चाहने वाले जनों को महर्षि दयानन्द के इन संदेशों का अनुगमन करना अति आवश्यक है। इस अनुगमन से स्वतः उनका व देश का कल्याण ही नहीं, बहुकल्याण होगा। **कल्पित महाकालेश्वर कल्याण करे या न करे! पर कालों का काल निराकार ईश्वर अवश्य कल्याण करता है। ईश्वर की आराधना के रूप में "भस्म आरती" आदि निरर्थक कार्यों को छोड़ें, कालों के काल ईश्वर शिव के बहुकल्याण को प्राप्त करें।**

– प्राचार्या
पाणिनी कन्या महाविद्यालय
वाराणसी–10

☞ पृष्ठ 6 का शेष

ऋषि बोध की सार्थकता

नगर–नगर में वैदिक धर्म की मशालें जला करती थीं, शोभा यात्राऐं निकला करती थीं। जब स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुदत्त, अमर स्वामी, कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर बोला करते थे रेल, बसें पैदल यात्री रुक जाया करते थे। शास्त्रार्थों में जनता को बैठने को स्थान भी नहीं मिला करता था। कोर्ट कचहरी में पचास अन्य गवाहों के आगे अकेले एक आर्य समाजी की बात को ही मान्यता दी जाती थी यह सच्चे आर्य समाजियों के कारण ही तो था। आज जबकि इन्टरनेट छाया हुआ है। टीवी, लेपटॉप प्रचार के आधुनिक साधन भी है आवागमन के अत्याधुनिक साधन हैं। अधिकारियों, मंत्रियों के पास बेरोकटोक जाए जा सकता है, महर्षि इन सबको लेकर आज वैदिक संस्कृति की आंधी चला देते और आज जैसे स्वामी राम देव योग को लेकर विश्व में छाए हैं ऋषि दयानन्द वेद की दुन्दभि भारत ही नहीं अमेरिका तक बजवा देते और घर–घर में अग्नि होत्र होता। राजकीय कार्य संस्कृत व हिन्दी में होते। मंत्री–सांसद वेद पढ़े हुए होते। अधिकारी बनने के लिए वेद का ज्ञान आवश्यक होता। वेद पढ़ कर ही राजनीति हुआ करती। देश की बागडोर वेद जानने वालों के हाथ होती। कोई विरुद्ध मत न होता, टीवी चैनलों पर अश्लीलता–कामुकता व भौडे–दृश्य न होते वेद प्रचार के चैनल होते और वेद प्रचार व शास्त्रार्थों की खबरें समाचार–पत्रों में प्रमुखता से छपा करतीं।

यदि करने चलें तो आर्य समाज का कार्य अत्यधिक विस्तृत है ऋषि बोधोत्सव पर इन सब विषयों पर विचार करना चाहिए और जिस प्रकार भी हो सके राष्ट्र व समाज तथा मानवता के विकास के लिए अपने कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए ऋषि बोध की यही सार्थकता होगी।

गली नं.–2, चन्द्र लोक कॉलोनी खुर्जा

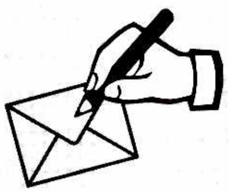

पत्र/कविता

विदेशी भाषा जानो पर खोटा गर्व न करो

आर्य जगत के अंक सितंबर 2/2012 में भाषा का विषय प्रकाशित है। जितनी भी देवनागरी संस्कृत हिन्दी, मराठी आदि भाषा में हैं उनका हम विविध माध्यम से प्रचार प्रसार कर रहे हैं। महाराष्ट्र के प्रायः सभी जिलों में विविध शिक्षा संस्थानों से हिन्दी, मराठी, संस्कृत के अंक प्राप्त होते हैं। आर्य जगत् भी उसमें अग्रेसर है। अंग्रेजी से उतना जीवन में उपयोग नहीं जितना मातृभाषा भारतीय भाषाओं से हैं। कृषि, आयुर्वेद, शिक्षा दी दिक्षा संविधान आदि राष्ट्र भाषाओं से ही अच्छी तरह जाना जाता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी, राष्ट्रपति कार्यकाल में हिन्दी का ही प्रयोग किया यह पढ़कर प्रकाशन के लिए हार्दिक साधुवाद है। भाषा, भूषा, तथा मैषज'' आपकी भाषा के माध्यम से अवगत होता है यह विचार सत्य है। परिक्रमा के लिए प विदेशी भाषा जानो किंतु खोटा गर्व नहीं दिखाना चाहिए ''आर्य जगत्'' हिन्दी साप्ताहिक भाग पुनश्च अभिनंदन

प्रा. एम.वी. काले,
सरस्वती विद्यालय प्रकाश नगर,
लातूर (महाराष्ट्र)

****

तमस भरे मेरे भारत में नव प्रकाश आलोक दिया

तुमने ऋषिवर दयानंद जग का उपकार किया।
रच सत्यार्थ प्रकाश जगत् में नव प्रकाश संचार किया।।

शिव मंदिर में आराधन को, बड़े भाव से आये थे।
सोये सारे भक्त, न तुमने तनिक नयन झपकाये थे।।

यह क्या? कैसा हुआ वाकया? चूहा इक शिव लिंग चढ़ा।
भक्षण कर मिष्टान आदि का, लेता था आनन्द बड़ा।।

टूटा था विश्वास सेतु, तब जाग उठा था प्रबल विवेक।
कैसा शिव यह, कैसी शक्ति? भगा न सका जो चूहा एक।।

क्या रक्षित होगा जग शिव से, मन में अमिट हुई थी रेख।
चूहा दौड़ गया था उनके मन मानस में प्रश्न अनेक।।

स्वर्ग सिधारी भगिनी प्यारी, सारे परिजन रोये थे।
दयानंद तो मौन भाव से, मृत्यु सोच में खोये थे।।

तभी अचानक प्रिय चाचा भी जग से स्वर्ग सिधार थे।
फूट–फूट रोये थे ऋषिवर, अश्रु न उनके थमते थे।।

मृत्यु क्या, कैसे होती है, तत्व खोज संकल्प लिया।
उचट गया मन, गृह का था परित्याग किया।।

घूम–घूम कर भटके थे तब विरजानन्द से गुरू मिले।
वेदों के मर्मज्ञ बड़े थे, ज्ञानी ध्यानी निपुण बड़े।।

वेद–धर्म का ज्ञान मिला औ संस्कृति के संरक्षण का।
शिक्षार्जन के बाद था आया मौका कर्ज चुकाने का।।

बोले गुरुवर यही दक्षिणा, वेद धर्म विस्तार करो।
धर्म पताका फहराओ और सकल विश्व कल्याण करो।।

निकल पड़े थे दयानंद तब, सत्य राह दिखलाने को।
अंध रूढ़िगत विश्वासों से जग को मुक्त कराने को।।

पाखंड खंडनी ध्वजा उठाई, आर्य जाति उत्थान किया।
निराकार ईश्वर सत्ता का, जग को दृढ़ विश्वास दिया।।

सती प्रथा का कर विरोध नारी समाज को मान दिया।
पढ़ी लिखी शिक्षित हो नारी, पावन यह संदेश दिया।।

नही श्रेष्ठ है बाल–विवाह, अन्याय नारी पे श्रेष्ठ नहीं।
खुलकर बिगुल बजाया तुमने, दी समाज को दिशा नई।।

आज नहीं तुम दुनियाँ में पर, मार्ग अनोखा दिखा दिया।
तमस भरे मेरे भारत में, नव प्रकाश आलोक दिया।।

श्रीमती निर्मला आर्य
प्रधानाचार्या, राजकीय बालिका विद्यालय तलवण्डी कोटा

समय पुकार रहा है।

साप्ताहिक आर्य जगत का अंक दि. 11 नवम्बर 2012 देर से प्राप्त हुआ है। परन्तु इस अंक में श्री पूनम सूरी जी के हृदय उद्गारों को पढ़कर मन द्रवित हो गया। रोहणी में आर्य महा सम्मेलन में श्री पूनम सूरी जी ने बड़ी व्याकुलता और विनम्रता से जो पीडा व्यक्त की है वह। वास्तव में यथार्थ है और आर्यो के लिये प्रेरणा दायक है। जब तक आर्यो का एक मजबूत संगठन नही होगा तब तक आर्य सम्मेलनों का कोई लाभ प्रभाव नही होगा। केवल प्रदर्शन होगा। आज देश की भंयकर स्थिति को देखकर समय की पुकार है कि आर्यो एक हो जाओ। ईर्ष्या द्वेष को त्याग कर एक दूसरे को गले लगाओ। पद की लालसा नहीं सेवा की भावना बनाओ। सोचो हम कौन थे क्या हो गये।

देवराज आर्य मित्र
नई दिल्ली

****

प्रचार कार्य को तेज करने की घोषणा अच्छी लगी

आप अपनी सभा के प्रधान चुने गए, यह हर्ष का विषय है। प्रादेशिक सभी प्रचार की दृष्टि से बहुत ढीली चल रही है। आपने अब इस कार्य को तेज करने की घोषणा की है। तो अच्छा लगा।

स्मरणीय है कि प्रचार की दृष्टि से डीएवी पाठशालाओं में हवन होता है तथा विद्यार्थियों को सड़क पर जलूस के रूप में घुमाया जाता है। हवन के अवसर पर उपदेश जिन का कराया जाता है वे पाठशालाओं के अध्यापक ही होते हैं।

इस स्थिति में मैं आपकी प्रस्ताव भेजता हूँ कि आप आर्य प्र सभा, महाराष्ट्र की प्रचार शैली को अपनाएं। वह सभा प्रतिवर्ष एक मास (श्रावण) का एक प्रचार कार्यक्रम स्वयं बनाकर अपनी सभी आर्य समाजों को भेजती है जिसमें एक उपदेशक व एक भजनीक पर आधारित एक दल पांच–आठ समाजों में जाता है। पूरे आर्य समाजों में ऐसे प्रचार दल 30–40 बनाकर सभा भेजती है तथा सब समाजों को उनसे प्रचार कराना ही होता है। मई मास की ''वैदिक गर्जना'' में इस वर्ष का प्रचार कार्यक्रम आप देख लेंगे तो आप को मेरी बात अच्छी प्रकम से समझ में आ जाएगी।

इन्द जित् देव
सिटी सैन्टर के निकट,
यमुनानगर (हरियाणा)

ARYA JUGAT Ist PAPER 03 MAR2013 lay 2N Tuesday February 26 2013 Black

डी.ए.वी. आर के पुरम में तारे जमीन पर उतरे

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल रा.कृ. पुरम सै 1 में पाँचवी कक्षा के छात्रों ने तारे जमीन के प्रोजैक्ट शो द्वारा बच्चों के जीवन के विभिन्न मनोभावों और समस्याओं को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में दर्शाया गया कि बचपन से युवावस्था तक बच्चों के खाने–पीने, खेलने–कूदने, जैसे सभी फैसलों में अभिभावक सहयोगी न बनकर निर्णायक बन जाते हैं। इसी कारण बच्चों में आत्मविश्वास व निर्णय लेने की क्षमता का विकास नहीं हो पाता। समस्याओं के साथ समाधान सुझाए। फैशन शो तथा गीत व नृत्य द्वारा सभी विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया।

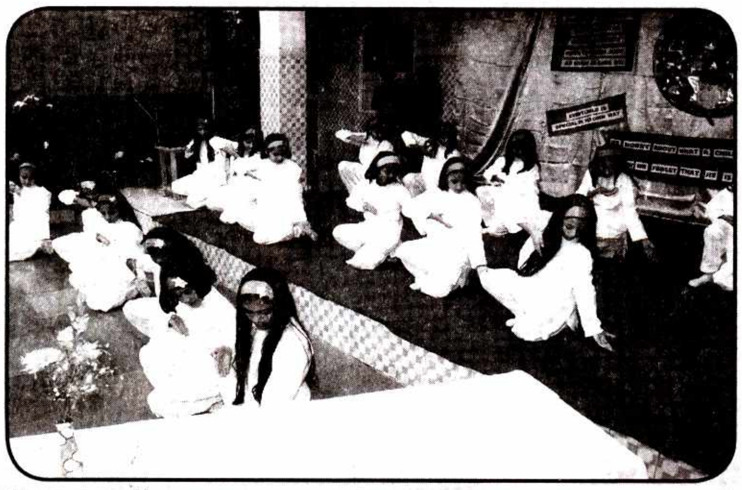

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. निशा पेशिन (निदेशक, पी.एस.) III व पाठ्यचर्या विकास), श्री एच.एल.भाटिया (मैनेजर), श्रीमती ऋतु पंत (प्रधानाचार्या वसंत विहार), इंदू कोहली (एसोसिएट प्रो. मैत्रेयी कॉलेज), व डॉ. कंसल थे।

डॉ. निशा पेशिन ने कार्यक्रम के शीर्षक को सराहा व अध्यापिकाओं की प्रशंसा करते हुए बच्चों के मनोभावों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने पर बधाई दी। अभिभावकों ने भी माना कि वह कार्यक्रम द्वारा एक सीख लेकर जा रहे हैं, जो उन्हें बच्चों को समझने में सहायक होगी।

आर्य समाज फरीदाबाद ने नेता जी सुभाष को याद किया

आर्य समाज सैक्टर–7 फरीदाबाद के तत्वावधान में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के जन्म दिवस पर यज्ञ–हवन प्रार्थना की गई। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक पुरोहित श्री ओमप्रकाश मौनी एवं अन्य उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने अपने 2 ढंग से नेता जी को याद किया। मुख्यतः श्री ओमप्रकाश मौनी, पुरोहित श्री आर.

आर. शर्मा प्रचार मंत्री, व श्री राम. बीर नाहर, मंत्री व श्री तेजपाल सिंह आर्य ने नेता जी के जीवन पर प्रकाश डाला

यज्ञ के उपरान्त यजमान श्री तेजपाल सिंह आर्य जी को सभी उप. स्थित गणमान्य व्यक्तियों ने आर्य पुरो. हित श्री ओम प्रकाश मौनी के माध्यम से आशीर्वाद दिया।

डी.ए.वी. रोहतक में अन्तर-विद्यालय पर्यावरण प्रश्नोत्तरी का आयोजन

डी.ए.वी.शताब्दीपब्लिकस्कूल, रोहतक में अन्तर–विद्यालय पर्यावरण प्रशनोत्तरी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें शहर के 9 प्रमुख विद्यालयों ने भाग लिया। कड़ी प्रतियोगिता में डी.ए. वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल, रोहतक ने प्रथम व पठानियापब्लिक स्कूल रोहतक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के सम्मानीय अतिथियों महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के प्रोफेसर डॉ. राजेश धनखड़ व डॉ सुधीर कुमार कटारिया ने प्रतियोगियों से आह्वान किया कि वे वाहनों व मोबाईल फोन का कम से कम प्रयोग करके कार्बन उत्सर्जन कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायें।

प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता जुनेजा ने इस दिशा में विद्यालय द्वारा किए जा रहे सतत् प्रयासों से अवगत करवाते हुए उपस्थित जनसमूह को पर्यावरण बचाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने युवा प्रतिभागियों की वैश्विक पर्यावरण के प्रति सकारात्मक सोच के लिए प्रशंसा की।

☞ पृष्ठ 7 का शेष

अणु तस्करी प्रकरणों .....

800 'स्पार्क गैप्स' अमेरिका के अन्दर ही एक दक्षिण अफ्रीकी नागरिक द्वारा खरीदे गए जिन्हें दुबई होकर एक जहाज द्वारा पाकिस्तान भेजा गया था। योरोपीय अवैध आणविक काला बाजार का ही यह नतीजा था कि डॉ. खान ने वर्षों पहले चीन से भी अणु बमों की डिज़ाइन या ली थी। पाकिस्तान जैसे आजतक राज्य में ही यह संभव था कि भारत के विरुद्ध घृणा के नाम पर डॉ. खान इस धंधे के नेटवर्क के वे प्रमुख कर्ता–धर्ता व संयोजक बन सके। पाकिस्तानी आणविक कार्यक्रमों में धन की कभी कमी नहीं रही और न आज भी है। आज भी लगभग 10 बिलियन डॉलर उस पर व्यय होते हैं। इस राशि का अनुमान पाकिस्तानी सूत्रों से नहीं बल्कि लीबिया, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और मुस्लिम देशों के कुछ बड़े जमाकर्ताओं के सूत्रों से लगाया गया है।

पाकिस्तान भारत की बढ़ती आणविक शक्ति से उस रणनीति को सदैव अपनाता रहा है जो विक्षिप्तता के स्तर को छूती रही है। हाल में वरिष्ठ अमेरिकी सांसदों ने विदेशमंत्री हिलेरी क्लिन्टन द्वारा जहां पाकिस्तान के हक्क़ानी मदरसों के नेटवर्क को विदेशी आतंकवादी समूह का दर्जा देने के निर्णय का स्वागत किया, हमारे देश के मीडिया में इस पर मिश्रित प्रतिक्रिया जताई गई है। जहां अमेरिका पाकिस्तानी आई.एस.आई. द्वारा समर्थित इसके वित्तीय और व्यापारिक नेटवर्क को तोड़ने के लिए कटिबद्ध है हमारी विदेशनीति ने आतंकवाद, अणु अप्रसार और इसको अप्रत्यक्ष आर्थिक संरक्षण देने वालों के विरुद्ध कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। सरकार तो सामान्य नागरिकों को उन प्रकरणों से भी पूरी तरह अवगत नहीं कराना चाहती है जो हमारी प्रभुसत्ता को चुनौती देते रहे हैं।

ए–1002 पंचशील हाईटस
महावीर नगर, कान्दिवली (प.)
मुम्बई–400067

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 27-28/02/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

डी.ए.वी. कुकटपल्ली हैदराबाद ने मनाया रजत जयन्ती समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कुकटपल्ली हैदराबाद ने अपने 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में को भव्य समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में डी.ए.वी. प्रबन्ध कर्तृ समिति के कोषाध्यक्ष श्री मेहश चोपड़ा जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। मैंनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के निदेशक श्री जे.पी शूसूर इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वरूप उपस्थित हुए। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पी.जी.शास्त्री जी उपस्थित थे। डी.ए.वी. दक्षिण जोन् की निदेशिका श्रीमती सीता किरण जी डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्य, प्रधानाचार्य व नगर के अनेक गणमान्य अतिथि भी पधारे प्राचार्य, अध्यापकगण एवं छात्रों द्वारा औपचारिक रुप से भव्य स्वागत किया गया। तत् पश्चात् सभी अतिथियों के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर इस समारोह का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी. संस्था में 25 वर्षों से कार्यरत होने पर प्राचार्या श्रीमती एस रमन जी तथा अध्यापिका श्रीमती ए.

आर. कौशल्या जी का सम्मान किया गया। सम्मानोपरान्त महेश चोपड़ा जी ने विद्यालय की स्फूर्ति नामक स्मारिका का विमोचन किया। प्राचार्या जी ने बीते 25 वर्षों का विवरण प्रस्तुत किया। योग्य छात्रों को राष्ट्रीय पुरस्कारों एवं जिलास्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्रों ने 'आन्ध्रावैभवम्' के द्वारा आन्ध्र प्रदेश की सभ्यता एवं संस्कृति को प्रस्तुत किया और दक्षिण भारत की संस्कृति,सभ्यता का दर्शन करवाया। सभी अतिथियों ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए विद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। अंत में राष्ट्रगान, प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

डी.ए.वी. अशोक विहार फेज IV द्वारा जल बचाओ अभियान का शुभारंभ

डी.ए.वी. मैनेजिंग कमिटी द्वारा आरम्भ किए गए अभियान (प्रोजेक्ट बूँद) को सफल बनाने में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल फेज IV के छात्रों ने सराहनीय योगदान दिया। मैनेजिंग कमिटी के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी तथा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल संघ की अध्यक्ष श्रीमती निशा पेशिन इस अभियान के प्रमुख प्रेरणा स्त्रोत रहे।

विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने कनॉट प्लेस के सेंट्रल पार्क में हज़ारों डी.ए.वी छात्रों द्वारा बनाई गई मानव श्रृंखला में प्रमुख समन्वयक की भूमिका निभाई।

उपाध्यक्ष श्री श्रीदीप ओमचारी ने

विद्यालय के छात्रों के उत्साही दल द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक 'बूँद बहाओं' की भूरि-भूरि प्रशंसा की जिसका मंचन डी.ए.वी प्रबंधकर्तृ समिति के सभागार के साथ-साथ क्नॉट प्लेस, दीप मार्केट, कमला नगर तथा अशोक विहार की सड़कों तथा नुक्कड़ों पर किया गया। इस नुक्कड़ नाटक के द्वारा छात्रों ने जल की बर्बादी रोकने तथा छोटे-छोटे उपायों द्वारा जल की प्रत्येक कीमती बूँद को बचाकर अपने हरे भरे ग्रह पृथ्वी की रक्षा करने का संदेश सभी को दिया।

क्षेत्र के विधायक माननीय श्री हरिशंकर जी ने भी विद्यालय के छात्रों के प्रयास की मुक्त कंठ से सराहना की।

नाटक में बोले गए चुटीले संवादों तथा दुपट्टे का विभिन्न प्रतीकों के रूप में प्रयोग ने सभी उपस्थितजनों का मन मोह लिया।

स्व. माता धापा देवी की पुण्यतिथि पर झज्जर में हुआ वैदिक सत्संग कार्यक्रम

यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ-भजन प्रवचन-अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्यातिथि भारत स्वाभिमान झज्जर के नै. ब्र. इन्द्रजीत जी एवं नै. ब्र. जयवीर आर्य के प्रवचन हुए। देश-प्रेम को जागरित करने की दृष्टि से कहा-यदि हम आपस में लड़ बैठे तो देश को कौन बचाएगा? दोनों पवित्र आत्माओं ने प्रबुद्ध श्रोताओं को आज के विषम वातावरण में अपने बच्चों को बुराइयों से बचा ले जाने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम के अध्यक्ष गुरुकुल झज्जर के प्रधान श्री पूर्णसिंह जी ने कहा-जिस समाज में श्रेष्ठों का सम्मान होता है वह समाज उन्नति करता है। अपने पूर्वजों की यशोगाथा को हमेशा याद रखना चाहिए। महिला आर्य समाज की प्रधाना मंजू सैनी, मन्त्री श्रुति आर्या एवं कोषाध्यक्ष कुसुम गुप्ता की देख रेख में बाल भजन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सत्यदेव आर्य तथा सूबेदार भरतसिंह ने यज्ञ से किया। श्रीमती अनामिका एवं श्री रवि आर्य मुख्य यजमान रहे।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**